thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 15 मार्च 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 15 मार्च 2015 से 21 मार्च 2015

चै.कृ 09 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 148, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब, केन्द्रीय आर्य सभा (रजि.), अमृतसर द्वारा अमृतसर में 'ऋषिबोधोत्सव' का भव्य आयोजन

ऋषिबोधोत्सव' का भव्य आयोजन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब, केन्द्रीय आर्य सभा (रजि.) अमृतसर की सभी डी.ए.वी शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य समाजों द्वारा गोलबाग में किया गया। मुख्यातिथि के रूप में माननीय आर्यरत्न श्रीपूनम सूरी जी (प्रधान, डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) ने पधारकर इस उत्सव को गौरवान्वित किया।इस अवसर पर श्री जे.पी.शूर, (मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब एवं निदेशक पी.एस–I) और डॉ. (श्रीमती) नीलम कामरा, (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब), ने मुख्यातिथि श्री पूनम सूरी जी, श्रीमती मनी सूरी एवं अन्य माननीय अतिथिगण–डॉ. एस.के सामा (उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली), श्री प्रबोध महाजन (उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली), श्रीमती महाजन श्री आर.एस. शर्मा (जनरल सैक्ट्ररी, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली,) श्रीमती शर्मा, डॉ. सतीश शर्मा (डायरेक्टर डी.ए.वी कॉलजिज), श्री एके. अदलक्खा, (डायरेक्टर प्रशासन नई दिल्ली), श्री अरिवन्द घई, (सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली), श्री जे. के लुथरा (ऑनररी–ट्रेज़र्र, डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली), स्वामी सूर्यदेव, स्वामी सदांनंद, श्री समीश कपूर श्रीमती लक्ष्मीकांता चावला, डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, का पुष्प मालाओं से हार्दिक अभिन्नदन किया।

भव्य आयोजन का शुभारम्भ 'वैदिक हवन यज्ञ' से हुआ। वैदिक हवन यज्ञ से पूर्व बी.बी.के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन के संगीत विभाग ने भजनगायन से उपस्थित को आंनन्द विभोर किया। इस उपलक्ष्य पर में श्री पूनम सूरी जी ने अपने शुभ करकमलों से बी.बी.के डी.ए. वी. कॉलेज के 'स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र' द्वारा प्रकाशित लघु पुस्तिका ''ऋषिगाथा'' का विमोचन किया। श्री पूनम सूरी जी ने अपने आशीर्वचनों में उपस्थित एवं छात्रवर्ग को महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं एवं वैदिक संस्कृति से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विशाल शोभा यात्रा का मुख्य उदे्श्य सामाजिक कुरीतियों, बाह्म आडम्बरों व पाखण्डों में फँसे भारतीय समाज को पुनः जागृत करना है। यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जो कर्म परहित व मन की पवित्रता से किया जाए वही कर्म महायज्ञ है। मुख्यातिथि द्वारा वैदिक ध्वज फहराकर एवं बी.बी. के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमे, अमृतसर की छात्राओं द्वारा शंखनाद करके विशाल शोभायात्रा का शुभारम्भ किया गया। यह यात्रा गोलबाग से आरम्भ होकर हाल गेट, गोल हट्टी चौंक, टाउन हाल, कटड़ा जैमल सिंह, शास्त्री मार्किट, चैरस्ती अठारी, से होते हुए आर्य समाज, शक्तिनगर, में सम्पन्न हुई। इस शौभा यात्रा में अमृतसर शहर की सभी डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित झाँकियों के माध्यम से महान समाज सुधारक एवं युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शो–शिक्षाओं का जनमानस में प्रचार–प्रसार किया गया एवं जातिवाद, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, भ्रूणहतया, दहेजप्रथा, नारीउत्पीड़न आदि सामाजिक बुराईयों और जलसंरक्षण, वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर आदि योजनाओं से जन–जन को जागृत करके विश्व कलयाण कासंदेश प्रेषित किया गया।

इस अवसर पर प्रिं. राजेश कुमार, प्रिं, नीरा शर्मा, प्रिं. अजना गुप्ता, के अतिरिक्त पंजाब भर से आए प्राचार्य उपस्थित थे।

डी.ए.वी. पुष्पांजलि, (दिल्ली) में मनाया गया स्वामी दयानन्द दिवस

डी.ए.वी. स्कूल पुष्पांजलि के प्रागंण में महर्षि दयानन्द जी के 191 वें जन्म दिवस पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें आठवीं कक्षा के सभी छात्र–छात्रायें सम्मिलित हुए और श्रद्धा से यज्ञ में आहुति प्रदान की। यज्ञोपरांत एक विशेष सभा हुई, जिसमें छात्र–छात्राओं ने स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश छालते हुए भाषण, भजन प्रस्तुत किए। अन्त में प्रधानाचार्या श्रीमती रशिम राज बिस्वाल जी ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''हम सौभाग्यशाली हैं कि

हम डी.ए.वी. के माध्यम से महर्षि दयानन्द के गरिमामय व्यक्तित्व को पढ़ पा रहे हैं। वैदिक संस्कृति के प्रति स्वामी जी की आस्था, वैदिक मूल्यों की प्रस्थापना के लिए इतनी प्रतिबद्धता किसी ओर में दिखाई नहीं देती। तभी तो ऋषि दयानन्द जी युग पुरुष कहलाते हैं, जो पूरे समाज को अपनी तपस्वी दृष्टि से, आचरण से ऊर्ध्वगति देने के लिए संकल्पित थे जिससे पुनः वैदिक जीवन जीया जा सके। प्रधानाचार्या जी ने कहा कि आप धर्म शिक्षा की पुस्तकों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी और उनकी शिक्षाओं को पढ़ते तो हैं। परन्तु के उनकी शिक्षाएँ हमारे लिए तभी महत्त्वपूर्ण होंगी जब वे हमारे आचरण में आ जाएं। इसी लिए हम सब ऋषि दयानन्द जी के जन्मदिवस पर यह संकल्प लें कि हम उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारेंगे और अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करेंगे''।

अन्त में सभी ने स्वामी जी को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए कार्यक्रम को पूर्णता प्रदान की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 15 मार्च, 2015 से 21 मार्च, 2015

जो अन्धे-लंगड़े को तारता है

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अयं विप्राय दाशुषे, वाजाँ इयर्ति गोमतः।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे,
प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे।।

ऋग् १०.२५.११

ऋषिः **ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद् वा** । देवता **सोमः** । छन्दः **आस्तारपंक्तिः** ।

● (**अयं**) यह [सोम प्रभु], (**दाशुषे**) विद्यादान करनेवाले, (**विप्राय**) ज्ञानी ब्राह्मण के लिए, (**गोमतः**) गौओं से युक्त, (**वाजान्**) अन्न, धन, बल आदि, (**इयर्ति**) प्रेरित करता है, प्रदान करता है, (**अयं**) यह, (**सप्तभ्यः**) [पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन–बुद्धि इन] सात ऋषियों के लिए, (**वरं**) वर, (**आ[इयर्ति]**) प्रदान करता है [और], (**वः**) अपने, (**वि मदे**) विशेष मद में [आकर] (**अन्धं**) अन्धे को, (**श्रोणं च**) और लंगड़े को, (**प्र तारिषत्**) प्रकृष्ट रूप से तार देता है। [हे सोम !] तू, (**विवक्षसे**) महान् है।

● आओ, मित्रो! 'सोम' प्रभु की महिमा सुनो। सोम प्रभु जिसपर प्रसन्न हो जाता है, उसका कल्याण कर देता है। प्रसन्न वह उन्हीं पर होता है जो वर्णाश्रम–मर्यादा के अनुसार अपने कर्तव्य–पालन में संलग्न रहते हैं। वह विद्यदान करनेवाले ज्ञानी ब्राह्मण को धेनु, अन्न, धन, बल आदि प्रदान करता है। देखो, इन तपःपूत ज्ञानी ब्राह्मणों के अन्दर दिव्य गौएँ, अन्तःप्रकाश की दिव्य किरणें स्फुरित हो रही हैं, उसके अन्दर अदम्य आत्म–बल हिलोरें ले रहा है, बिना मांगे ही इन्हें गो–दुग्ध, अन्न, धन आदि अभीष्ट पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं। यह सब इन्हें इनके विद्यादान के प्रतिफल में सोम प्रभु ने दिया है। इसी प्रकार वह स्व–स्व–कर्तव्य–निरत क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को उन–उनके योग्य ऐश्वर्य से सम्मानित कर कृतार्थ करता है। इसके अतिरिक्त सप्त–ऋषियों को वह वर प्रदान करता है। शरीर के अन्दर जो पंच–ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये सात ज्ञान के साधन निहित हैं ये ही सप्त–ऋषि हैं, इन्हें वह अभीष्ट वर–प्रदान से निहाल कर देता है। नेत्रों को दिव्य दृष्टि–शक्ति, श्रोत्रों को दिव्य श्रवण–शक्ति, रसना को दिव्य स्वादन–शक्ति, नासिका को दिव्य घ्राण–शक्ति, त्वचा को दिव्य स्पर्श–शक्ति, मन को दिव्य संकल्प–शक्ति, बुद्धि को दिव्य अध्यवसाय–शक्ति देकर कृतकृत्य कर देता है।

और भी उस सोम–प्रभु की लीला देखो। वह अन्धे और लंगड़े को भी तार देता है। अन्धे को आँखें देनेवाला, नेत्रहीन की प्रज्ञा–चक्षु देनेवाला, अज्ञानियों को ज्ञान–चक्षु देने वाला, अविवेकियों को विवेक की आँख देनेवाला वही है। वही लंगड़े को पैर प्रदान करता है, साधनहीन के भी समीप लक्ष्य–सिद्धि के साधन जुटा देता है। उसकी कृपा होने पर अन्धा चक्षुष्मान् से अधिक और विकल चरणवाला अविकल चरणवाले से अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है – **जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधरे को सब कछु दरसाई।** हे सोम! तुम महान् हो, सचमुच महान् हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि 'भूः भुवः स्वः'–व्याहृतियों में एक रहस्य है। भूः भुवः स्वः का दूसरा भेद ठोस रूप में यह भूः भुवः स्वः ही प्राण, अपान और व्यान है। यह शरीर कैसे चलता है? यह संसार कैसे चलता है? प्राण, अपान और व्यान से।

ओ३म् या गायत्री का जाप करता हुआ उपासक जब अपने अन्दर प्राण का संबंध संसार के समष्टि रूप में प्राण से जोड़ लेता है तो वह एक नहीं रहता, सारा संसार एक हो जाता है। हर वस्तु के साथ उसका संबंध हो जाता है जिसमें प्राण है, और प्राण के बिना इस संसार में कोई भी वस्तु नहीं। वैदिक तत्त्व ज्ञान के अनुसार यह सारा संसार एक विराट् परम पुरुष का शरीर है। वेद कहता है, 'पुरुष ही है यह सब कुछ। जो दिखाई देता है, अनुभव होता है। सारा संसार एक ही शरीर है।' इसलिए आर्य लोग सारे संसार को अपना देश कहते थे। जो विराट् और सत्य रूप पुरुष की भूः भुवः स्वः के द्वारा प्रार्थना करता है वह पाप को मार भगाता है, पाप उससे दूर चला जाता है। पाप को दूर करने का कितना सरल उपाय है यह। यह है भूः भुवः स्वः की महिमा।

गायत्री की आराधना सब वेदों का सार रूप है। ब्रह्मा और दूसरे लोग भी संध्या के समय गायत्री का ध्यान करते थे, उसका जाप करते थे। जितनी भी सिद्धियां हैं सभी गायत्री की उपासना से मिलती हैं।

अब आगे...

ऋषि तो गायत्री की महिमा गाते हुए थकते नहीं। बृहदारण्यक उपनिषद् में उसके एक–एक शब्द की महिमा बताई गई है। एक–एक शब्द के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसकी उपासना करने वाला क्या पाता है। छान्दोग्य उपनिषद् में भी इसी प्रकार की महिमा का वर्णन है और 'ऋग्वेदादि–भाष्य–भूमिका' में महर्षि दयानन्द जी कहते हैं–

"बहुत श्रद्धा से गया संज्ञक प्राण आदि में परमेश्वर की उपासना करने से जीव की मुक्ति हो जाती है। प्राण में बल और सत्य प्रतिष्ठित हैं क्योंकि परमेश्वर प्राण का भी प्राण है, और उसका प्रतिपादन करने वाला गायत्री मन्त्र है, जिसको 'गया' कहते हैं।"

इसीलिए इस गायत्री को "गया" कहते हैं। जो इसका गायन करता है, उसे वह तारती है। इसीलिए अथर्ववेद पुकारकर कहता है–

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा
व्रजत ब्रह्मलोकम्।। अथर्व. 19।71।1।।

इस मन्त्र का देवता गायत्री है। मन्त्र के देवता का अर्थ है मन्त्र का विषय। वहाँ गायत्री का वर्णन करते हुए कहा कि, "ऐ वर देने वाली, प्रेरणा करने वाली, उन लोगों को पवित्र करने वाली जो शारीरिक जन्म के बाद आत्मिक ज्ञान की ओर बढ़ते हैं, ऐ प्रत्येक प्रकार के ज्ञान की जन्मभूमि, तू मुझे धर्म देती है..."

परन्तु धर्म क्या है? कई व्यक्तियों को धर्म का अर्थ ही समझ में नहीं आता। धर्म का सरल और सीधा–सा अर्थ है– वह मार्ग जिससे लोक और परलोक दोनों सुधर जाएं। इसीलिए गायत्री को धर्म देने वाली कहा गया। परन्तु धर्म तो शरीर के साथ ही है। शरीर न हो तो धर्म नहीं हो सकता? लोक परलोक के सुधारने का प्रश्न भी उत्पन्न नहीं होता। बूढ़े–बूढ़े लोग जब किसी पर प्रसन्न होते हैं तो कहते हैं, "तेरी लम्बी आयु हो!" जब से मैं संयासी बना हूँ, कितने ही घरों में गया। प्रत्येक स्थान पर लम्बी आयु की इच्छा उपस्थित है। पति चाहता है पत्नी की आयु लम्बी हो, पत्नी चाहती है वह पति के हाथों में जाए।

और वेद कहता है, "ऐ गायत्री माँ! तू लम्बी आयु देने वाली है।"

परन्तु लम्बी आयु ही तो सब–कुछ नहीं। आयु हो गई लम्बी परन्तु शरीर को हो गया अर्धांग, आदमी चलने–फिरने से भी हो गया लाचार– तब दीर्घायु क्या करेगी? रोगी व्यक्ति मरना चाहता है, दीर्घायु नहीं चाहता।

thearyasamaj.org

इसलिए वेद कहता है, "माँ! धर्म देने वाली, दीर्घायु देने वाली, तू स्वास्थ्य देनेवाली और स्वस्थ शरीर देने वाली भी है।"

गायत्री के उपासक को रोग या तो होता नहीं, हो जाए तो बहुत शीघ्र अच्छा हो जाता है। परन्तु केवल दीर्घायु और स्वास्थ्य ही तो मनुष्य की आवश्यकता नहीं है। दीर्घ आयु हो, स्वास्थ्य अच्छा हो, तो मनुष्य सन्तान भी चाहता है।

इसीलिए वेद–मन्त्र ने कहा, "ऐ वेद माता, वर को देने वाली, तू सन्तान भी देती है।"

अच्छा जी, बच्चे हो गए आपके यहाँ पाँच, दस, पन्द्रह, बीस; स्वास्थ्य भी अच्छा है, आयु भी लम्बी है, परन्तु यदि घर में खाने को कुछ नहीं तो फिर क्या होगा? बच्चों को अनाथालय में भेज देना होगा क्या? सरकार के अर्पण कर देना होगा कि मैंने बच्चे पैदा कर दिए, अब जवाहर लाल पालता फिरे?– नहीं, गायत्री के उपासक को यह कठिनाई नहीं होती।

वेद कहता है, "गायत्री माँ! तू पशु–गाय, भैंस, गाड़ी, मोटरों और जहाजों को देने वाली है, धन और दौलत को देने वाली है, इनको बढ़ाने वाली है, इच्छाओं को पूरा करने वाली है।"

परन्तु मनुष्य के पास दीर्घायु हो, अच्छा स्वास्थ्य हो, विशाल परिवार हो, अन्न के भण्डार हों, मोटरें हों, गाड़ियाँ हों, धन की रेल–पेल हो, तो भी वह एक वस्तु और चाहता है। वह वस्तु है मान, प्रतिष्ठा– यह बात कि लोग इसकी प्रशंसा करें। इसलिए मन्त्र कहता है, "तू कीर्ति को देने वाली है।"

परन्तु क्यों जी! आयु, स्वास्थ्य, परिवार, धन–धान्य, कीर्ति– ये सब वस्तुएँ अच्छी हैं अवश्य, परन्तु हैं क्या? एक दिन तो इनको नष्ट होना है। लम्बी–से–लम्बी आयु सदा नहीं रहती। अच्छे–से–अच्छा स्वास्थ्य भी अन्ततः अवश्य खराब हो जाता है। बड़े–से–बड़ा परिवार भी अन्त में नष्ट हो जाता है। धन के ढेर भी अन्त में समाप्त हो जाते हैं। कीर्ति की भी एक सीमा होती है; इससे आगे वह जाती नहीं। इन सब के मिलने से मनुष्य को सुख अवश्य होता है, उसका कल्याण नहीं होता। कल्याण है इस बात में कि इन सब वस्तुओं को भोगने के पश्चात् उस ब्रह्मलोक को प्राप्त किया जाए, जहाँ प्रभु के दर्शन होते हैं; जहाँ ऐसा आनन्द है, जो कभी समाप्त नहीं होता, जिसका कोई अन्त नहीं है। इसलिए वेद भगवान् ने कहा, "यह सब–कुछ देने के बाद तू उपासना करने वाले को ब्रह्मलोक में ले जाती है, प्रभु के द्वार पर पहुँचा देती है, उसका दर्शन करा देती है।"

इतनी बड़ी महिमा है इस तंत्र की, इसीलिए महर्षि दयानन्द ने पूना में भाषण देते हुए इसे महामन्त्र कहा, इसीलिए वेद और उपनिषद् इसकी चर्चा करते हैं, इसलिए पुराण इसकी कहानी कहते हैं, भगवान् कृष्ण इसका जाप करते थे, ब्रह्मा करते थे, शिव करते थे। क्यों करते थे? कोई बात है न इसमें? वह बात यह है कि इस मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना, तीनों को इकट्ठा कर दिया गया है। इस महिमा के बाद गायत्री की बात सुनिए। परन्तु यह बात कठिन है, इससे पूर्व अपना मन शान्त कर लीजिए, मन–ही–मन में गायत्री मन्त्र पढ़िए और फिर मन को खाली छोड़ दीजिए। थोड़ी देर के लिए मैं आपको ध्यान की अवस्था तक ले जाऊँगा, ताकि प्रत्येक बात आपकी समझ में आ जाए।

(तब एकदम जैसे सन्नाटा छा गया। सब ओर सन्नाटा है। उसी सन्नाटें में स्वामी जी की आवाज़ सुनाई दी– 'ओ३म् और स्वामी जी कहने लगे–)

इस प्रकार सन्नाटा था, कहीं कोई आवाज़ न थी, रूप न था, उस समय परमेश्वर की प्रेरणा करने वाली शक्ति ने– सविता ने, सोई हुई प्रकृति को जगा दिया। सबसे पहले महत् तत्त्व उत्पन्न हुआ जिसे शास्त्र समष्टि बुद्धि कहते हैं और उनका थोड़ा–थोड़ा भाग इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मानुसार मिलता है। इस समष्टि बुद्धि के पश्चात् उत्पन्न हुआ अहङ्कार, उनसे पाँच तन्मात्राओं का जन्म हुआ। पाँच तन्मात्राओं से पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों का जन्म हुआ। जैसे हमारे अन्दर एक चित्त है– एक जीवन–शक्ति है, उसी प्रकार सारे संसार में भी समविष्ट चित्त या समष्टि जीवन–शक्ति भी है। अपने चित्त को जब तक हम उस समष्टि चित्त में न ले जाए और वहाँ से आगे सविता तक न पहुँचें, तब तक परमात्मा नहीं मिलता। सविता केवल उत्पन्न ही नहीं करता, पालन भी करता है। लोग जब थक जाते हैं तब उन्हें सुला भी देता है; तब हम कहते हैं कि प्रलय आ गई। पुराणों में जिस शक्ति को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के नाम से याद किया गया, वही सविता है। सूर्य को भी इसलिए कविता कहते हैं कि वह प्रातःकाल के समय समय लोगों का उठाता है, दिन को प्रलय हो जाती है, उस समय रात आ जाती है, और दूसरी प्रातः फिर से दिन आरम्भ हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा की सविता–शक्ति प्रलय के बाद सोई हुई प्रकृति को जगाकर इसमें जीवन फूँक देती है। तब चार अरब वर्ष का दिन आरम्भ होता है। चार अरब वर्ष के बाद प्रलय आती है। रात छा जाती है। रात्रि और शान्ति। चार अरब वर्ष तक यह रात्रि रहती है। आठ अरब के इस दिन और रात्रि के पश्चात् फिर से सृष्टि आरम्भ होती है। फिर से कविता–शक्ति कहती है, "उठो, जागो, सवेरा हो गया!" सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में इस महान् सविता–शक्ति ने भुर्भूवः स्वः की भावना दे दी है ताकि प्रत्येक वस्तु उपस्थित हो बढ़ती जाय और अन्त में आनन्द के अन्दर पहुँचकर सो जाय। एक पूरी स्कीम उसने बना दी है। बीज से पौधा बनता है, पौधे से वृक्ष, वृक्ष पर फल और फूल खिल उठते हैं और तब यह धीरे–धीरे सोने लगता है, सब–कुछ समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार यह सृष्टि है, जागती है, बनती है, समाप्त हो जाती है, ताकि फिर से जागे, फिर से बने।

शेष अगले अंक में....

तत्ववेत्ता सत्य संशोधक

महर्षि दयानन्द सरस्वती (मूल शंकर) का बोध दिवस शिवरात्रि

● **हरिश्चन्द्र आर्य**

स्वामी दयानन्द जी के पूज्य पिता श्री कर्शन लाल जी तिवारी एक जमींदार थे तथा लेन देन का कार्य करते थे, कौशल्या ग्राम का अधिकतर भाग उनके अधिकार में था। कर्शन जी को राजस्व प्राप्त करने के भी अधिकार प्राप्त थे जो राजस्व संग्राहक (कलैक्टर) को प्राप्त है। कर्शन जी कट्टर शैव थे उन्होंने टंकारा में कुबेर नाथ महादेव का मंदिर बनाया था। उनके पिता जी ने उन्हें शैवमत की शिक्षा दी शिव की पूजा में उपवास रखना पड़ता है परन्तु मूलशंकर की माता जी अपने पति का विरोध करती थीं कि उपवास में छोटी आयु के उनके पुत्र के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इससे पति पत्नी के बीच प्रायः झगड़ा होता था। मूल शंकर दस वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मूर्ति पूजा में सलंग्न हो गये जहाँ कहीं शिव माहात्म्य का वर्णन होता था उनके पिता जी उन्हें अपने साथ ले जाते थे। मूल शंकर ने संपूर्ण यजुर्वेद एवं अन्य वेदों का कुछ भाग कंठस्थ कर लिया था इससे पूर्व उन्होंने रूद्राध्याय कंठस्थ कर लिया था। जो प्रत्येक शिव उपासक के लिए अनिवार्य थे। इस प्रकार जब मूल शंकर चौदह वर्ष के हुए उनकी शिक्षा जो शैव होने के लिए आवश्यक थी पूर्ण हो गई।

इस अवधि में दो घटनाएँ हुई एक जब वह तेरह वर्ष के थे और दूसरी जब वह 18 वर्ष के थे इन घटनाओं से मूल शंकर के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।

प्रथम घटना शिवरात्रि के दिन की है। उनके पिता जी ने उन्हें उस दिन उपवास रखने को कहा और जागेश्वर के मंदिर में रात्रि जागरण के लिए कहा इसका वर्णन स्वामी दयानन्द ने अपनी आंशिक आत्मकथा में किया है। इसी घटना से उनका विश्वास मूर्ति पूजा से उठ गया था। दूसरी घटना पांच वर्ष बात की है जब वे 18 वर्ष के थे।

स्वामी दयानन्द जी ने दोनों घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया है। पूज्य पिता जी मुझे आदेशित करते थे कि मैं अब पार्थिव पूजा आरंभ कर दूँ जब महाशिवरात्रि पर उपवास का महान पर्व आया जो माघ माह की तेरह बदी को करना पड़ता है, मेरे पिता जी ने मेरी माता जी के विरोध के कारण कि मेरी शक्ति उपवास के कारण क्षीण हो जायेगी, को अनदेखा कर मुझे उपवास रखने और साथ ही साथ शिव मंदिर में होने वाली सभी गतिविधियों तथा रात्रि जागरण में भाग लेने का आदेश दिया। तदनुसार मैंने उनका अनुसरण किया। हमारे साथ कुछ और नौजवान और उनके माता–पिता थे। रात्रि जागरण चार प्रहर का था एक प्रहर तीन घंटे का होता है, मैंने अपना कार्य पूर्ण निष्ठा से किया। आधी रात के बाद मैंने देखा मंदिर के पुजारी एवं अन्य सेवक तथा भक्त लोग मंदिर के अंतःभाग से बाहर आकर गहरी निद्रा में लीन हो गए। मैं वर्षों से यह सुनता आ रहा था कि इस विशेष रात्रि में यदि उपासक सो जाए तो भक्ति का कोई फल नहीं मिलेगा। अतः सो न जाऊं इसी लिए अपनी आंखों पर पानी के छीटें देकर जागने का प्रयास करता रहा परन्तु मेरे पिता कुछ कम भाग्यशाली थे निद्रा पर विजय न पाने के कारण वे गाढ़ निद्रा में लीन हो गए। मैं अकेला जागता रहा। मेरे मस्तिष्क में विचारों की श्रृंखला चल रही थी और मेरे मन में एक

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

thearyasamaj.org

दो शब्द– धर्मनिरपेक्षता और धर्मान्तरण

● श्रुति भास्कर

राष्ट्र को बिखराव एवं अलगाववाद की ओर ले जाने में इन शब्दों की सबसे ज्यादा भूमिका है। कुछ राजनेता देश की जनता को बेवकूफ बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये अक्सर इन शब्दों को प्रयोग करते रहते हैं। जबकि धर्मनिरपेक्ष शब्द ही गलत है। **धर्म सापेक्ष राष्ट्र** सही शब्द है। इसी प्रकार धर्मान्तरण शब्द गलत है। इसके स्थान पर **सच्चे धार्मिक बनाने** का प्रयोग करना चाहिए।

सारी दुनिया में भारत को धर्म प्रधान राष्ट्र के रूप में जाना जाता है। सम्पूर्ण विश्व को शान्ति और भाईचारा का संदेश देने वाले विश्व गुरु कहलाने वाले इस देश में जब धर्म के नाम पर लोग लड़ते हैं तो दूसरे देश के लोग क्या सोचते होंगे, कहीं हम अपने गौरव को अपने ही हाथों से नष्ट तो नहीं कर रहे हैं?

इस धर्मप्रधान भूखण्ड के सरोवर में धर्मनिरपेक्षता का ऐसा कंकर फेंका गया कि साधारण लहरों ने भयंकर लहरों का रूप धारण कर लिया और हम आपस में लड़ मरे, कट मरे, कभी हिन्दू–मुसममान में, कभी शिया–सुन्नी में, कभी यहूदी–ईसाइयों में, कभी वैष्णव–जैन में, कभी सिक्खों और निरंकारियों में। इसी प्रकार कुछ लोगों द्वारा धर्म परिवर्तन चलाकर आपस में नफ़रत एवं वैमनस्य पैदा किया गया।

हमने एकता में अनेकता में एकता को बार–बार दोहराया फिर भी हमें एकता में रहना नहीं आया। एकता में रहने के दो तरीके हैं। एक है– संतरे वाला तरीका। संतरा बाहर से एक दिखता है लेकिन अन्दर से छील देने पर फाँक–फाँक बिखरकर अलग होने लगता है। दूसरा है खरबूजे वाला तरीका– खरबूजा बाहर से अलग–अलग फाँक दिखाई देता है किन्तु अन्दर काटने के बाद एक ही होता है। भारतीय संस्कृति (वैदिक ऋचा) खरबूजे की तरह एकता में रहने का उपदेश करती है। **त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्...**

धर्मान्तरण का अर्थ होता है एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को ग्रहण करना जबकि वास्तविकता यह है कि धर्म एक होता है, उसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता; पंथ अनेक हो सकते हैं। दूसरा शब्द है धर्मनिरपेक्ष जिसका अर्थ होता है धर्म से अलग रहना या धर्म से विमुख रहना। जबकि सच्चाई यह है कि धर्म के बिना कोई भी प्राणी या वस्तु अलग रह नहीं सकती और अलग रहने का प्रयास करती है तो वह अपने मूल रूप को खो देगी। उदाहरण के लिये अग्नि का धर्म है जलाना। अगर वो जला नहीं सकती तो वह अग्नि नहीं रही। इसी प्रकार मानव का धर्म है मानवता। यानि किसी के काम आना और अगर ऐसा नहीं है तो वह व्यक्ति मानव नहीं है।

धर्म के प्रति वैचारिक विभिन्नता ही सारे अलगाववाद की जड़ है और जड़ को नष्ट किए बिना एकता, भाईचारे की बात करना राष्ट्र के छलावा है।

धर्म के प्रति वैचारिक एकता को जन–जन में पहुँचाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। आप कहेंगे कि यह कैसे सम्भव है? यह सम्भव है और इसका समाधान है वेद प्रदत्त विचारधारा से *** श्रणवन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्रः....** मानवमात्र को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि ऐ अमृत पुत्रों तुम सुनो। हिन्दुओं सुनो, मुसलमानों सुनो, सिक्खों सुनो, ऐसा सम्बोधन नहीं है। *** एको वसी सर्वभूतन्तरात्मा...** सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में एक संसार का मालिक वास करता है।

*** मनुर्भव–** वेद कहता है आप श्रेष्ठ मानव बनें, सज्जन बनें। सज्जनता मजहब सम्प्रदाय के दायरे में नहीं आती। हिन्दू बनने, मुसलमान बनने या सिक्ख बनने की बात नहीं कही गई है। *** मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि–** अर्थात् सभी प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें। *** एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति....** संसार का मालिक एक है; गुण, वातावरण, स्थान विशेष के अनुसार ज्ञानी पुरुष अनेक नामों से पुकारते हैं। अज्ञानी उसे अलग–अलग समझकर आपस में लड़ते हैं।

विचारों की एकता ही सारी एकता की जड़ है। सृष्टिकर्ता ने भी मानव मात्र को यही संदेश दिया है। *** समानो मंत्र समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्...**

अर्थात् हो विचार समान सबके। चित्त मन सब एक हो।

ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो।

जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में धर्म में विकार आते ही अर्थ और काम में स्वतः ही विकार आने लगता है जिससे जीवन और समाज में अशान्ति पैदा होती है। अतः हमें धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानना होगा। हमने धर्म को पूजा, नमाज और भक्ति तक ही सीमित कर दिया जबकि धर्म का अर्थ होता है– कर्तव्य। हमारा कर्तव्य क्या है इस संसार के रचियता के प्रति? हमारा कर्तव्य क्या है, राष्ट्र के प्रति? हमारा कर्तव्य क्या है माता–पिता। आचार्य के प्रति, हमारा कर्तव्य क्या है दूसरे प्राणियों के प्रति? जीवन के हर क्षण, हर स्थान और प्रत्येक क्रिया कलाप में धर्म की आवश्यकता होती है। धर्म को व्यापक दृष्टिकोण से देखने से व्यक्ति मजहब सम्प्रदाय के दायरे से बाहर निकलता है। इसी दृष्टिकोण के अभाव के कारण आज धर्म के नाम पर आतंकवाद, दंगे–फसाद आदि होते रहते हैं। वर्तमान समय में विद्वानों का अभाव एवं अविद्वानों का बाहुल्य भी धर्म के प्रति भ्रान्ति फैलाने में एक बड़ा कारण है। चूँकि विद्वान का विचार व्यापक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों, सुतर्क एवं सृष्टि नियमों पर आधारित होता है अतः वह मानवहित में होता है जब तक खुदा की इबादत करने वाला यह नहीं समझेगा कि सिख का वाहेगुरु भी हमारा खुदा ही तो है। हिन्दू का ईश्वर भी हमारा खुदा ही तो है, तब तक आपसी भाईचारा एवं शांति प्रेम की स्थापना राष्ट्र में नहीं हो सकती।

इसी प्रकार हिन्दू भी जब तक यह नहीं समझेगा कि मुसलमान जिस खुदा की उपासना करता है वह हमारा ईश्वर ही तो है।

धर्म के प्रति वैचारिक एकता को प्रसारित करके ही हम राष्ट्र एवं समाज में एकता और भाईचारा को मजबूती प्रदान कर एक शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्र की स्थापना कर सकेंगे।

धार्मिक प्रवक्ता एवं साम गायनाचार्य
मो.– 09412742557
Email:shrutibhaskar57@gmail.com

☞ *पृष्ठ 03 का शेष*

महर्षि दयानन्द सरस्वती ...

के बाद दूसरा प्रश्न आता रहा, जिसने मेरे मस्तिष्क को झकझोर दिया, मैने स्वयं से प्रश्न किया कि क्या यह संभव है कि मनुष्य की आकृति का यह भगवान जिसका वाहन नंदी मेरे सामने है और जो सभी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार चलता है, खाता है, सोता है, पीता है अपने हाथ में त्रिशुल धारण किये हैं डमरू बजाता है, लोगों को शापग्रसित करता है, क्या वह महादेव हो सकता है? इन सब विचारों का कोई समाधान न पाने के कारण मैंने अपने पूज्य पिता जी को जगाया और पूछा कि मुझे समझाइए कि इस मंदिर के शिव की महादेव से कोई समानता है? तुम यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हों, मेरे पिता ने कहा, क्योंकि मैं समझता हूँ कि इन्हें देखकर इनके सर्वव्यापक होने का विचार असंभव है। इस मूर्ति को देखकर जीवित देवता का भाव मेरी समझ में नहीं आ रहा है क्योंकि यह अपने ऊपर चूहों को दौड़ाने देता है और जरा भी विरोध नहीं करता। तब मेरे पिता जी ने मेरे यह समझाने का प्रयास किया कि यह यह कैलाश के महादेव की प्रस्तर प्रतिमा है जो ब्राह्मणों द्वारा वेद मंत्रों से पवित्र एवं संस्कारित की गई है। इस प्रकार यह भगवान बन गई। इससे पूर्व किंचित भी संतोष नहीं हुआ क्योंकि मैं नवयुवक था और इस व्याख्या से सन्तुष्ट नहीं हो सका।

दूसरी घटना का विवरण स्वामी जी इस प्रकार देते है कि मेरे परिवार में मेरे अतिरिक्त मेरे दो छोटे भाई ओर दो बहने थीं जब मेरा सबसे छोटा भाई पैदा हुआ तब मैं 16 वर्ष का था एक रात्रि को हम अपने एक मित्र के घर पर नाच गाना देख रहे थे तभी घर से एक सेवक हमारे पास भेजा गया कि मेरी 14 वर्षीय बहन एक घातक रोग से ग्रसित हो गई है। मेरी वह बेचारी बहन बावजूद भरपूर चिकित्सा के हमारे घर पहुँचने के चार घड़ी के अन्दर ही मर गई। एक घड़ी 24 मिनट के बराबर होती है। यह मेरा मृत्यु से प्रथम साक्षात्कार था। इससे मेरे हृदय पर बड़ा आघात लगा कि हमारे मित्र एवं सम्बन्धी विलाप कर रहे थे मैं पत्थर की तरह जड़ बना चिन्ता कर रहा था। इस संसार में कोई भी जीवित प्राणी मृत्यु के क्रूर हाथों से नहीं बच सकता। इसके थोड़े समय बाद ही मेरे चाचा जो बहुत विद्वान एवं दिव्य गुणों के स्वामी थे, जो मुझे बहुत प्यार करते थे, अचानक चल बसे। उनकी मृत्यु ने मुझे अत्यधिक उदास कर दिया। इससे मुझे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि संसार में जीने के लिए कोई भी सार्थक आधार नहीं है।

सच्चे ईश्वर की प्राप्ति एवं मृत्यु पर विजय इन दो लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ही सुख समृद्धि, ऐश्वर्य, विवाह प्रस्ताव को तिलांजलि देकर मूल शंकर ने भरी जवानी में गृह त्याग दिया।

यही है संक्षेप में मूल शंकर से दयानन्द की कहानी।

स्वामी जी ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, उन्होंने नारा दिया 'वेदों की ओर चलो', और कहा कि वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द का मुख्य ग्रन्थ है।

अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
अमरोहा मुरादाबाद मंडल

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिला अथवा न्यून मिला तो दोषी कौन है, भाग्य या हम?

समाधान– इसका समाधान है:–

● **यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिलता या कम मिलता है, तो निःसंदेह फल देने वाला दोषी है।**

● यदि समाज ने आपको पूरा फल नहीं दिया तो कोई बात नहीं, आपका कर्म बेकार नहीं जाएगा। **अगर समाज ने, राजा ने, पंचायत ने, आपको कर्म का पूरा फल नहीं दिया और आपका फल बच गया, तो अन्त में आपका फल ईश्वर देगा।** उस पर पूरा–पक्का विश्वास करें। आपको फल मिलेगा, फल कहीं नहीं जाएगा।

अगर क्या सोचते हैं? हमने अच्छे काम किए, इतनी समाज की सेवा की, इतना दान दिया, इतना पुण्य किया और हमको फल तो मिला ही नहीं। **अच्छे कर्म का फल नहीं मिला तो शोर मचाते हैं:– देखो साहब! हमारा कर्म बेकार गया, हमारा फल नहीं मिला।**

● **वे यह नहीं सोचते कि उन्होंने जो बुरे कर्म किए, उसका फल भी तो नहीं मिला।** जो गड़बड़ की, जो गलती की, उसका दंड अभी नहीं मिला, तो क्या आगे भविष्य में मिलेगा या नहीं मिलेगा? **उसके बारे में आप शोर नहीं करते कि दण्ड क्यों नहीं मिला अभी तक?**

● लोग बुरा फल मिलेगा तो अच्छा भी मिलेगा। दोनों मिलेंगे, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है।

● आपको अच्छा फल चाहिए कि बुरा? अच्छा चाहिए न। इसलिए अच्छा काम करो, बुरा काम नहीं करना, नहीं तो दंड मिलेगा। बार–बार दोहराता हूँ कि – **"दंड के बिना कोई सुधरने वाला नहीं है।"** दंड को हमेशा याद रखें, तो ही सुधार होगा।

शंका– जब प्रारब्ध से किसी कर्म का फल रोग के रूप में मिलना ही है, कर्म का दंड मिला है तो उसे भोगें, रोगी बने रहें, इलाज क्यों करवाते हैं?

समाधान– भगवान ने हमको 'कर्म–दंड' के रूप में रोग दिया है और भगवान ने ही कहा कि इस रोग की चिकित्सा भी करवा लेना। रोगी हो जाएँ, तो फिर चिकित्सा करवाएँ। चिकित्सा के लिए हजारों प्रकार की औषधियाँ, वनस्पतियाँ भगवान ने बनाईं हैं।

हम कर्म गड़बड़ करते हैं तो दंड मिलेगा और दंड मिलेगा तो फिर चिकित्सा कराकर और आगे अवसर भी तो मिलना चाहिए। यदि रोगी हो गए और चिकित्सा नहीं कराई तो मर जाएँगे और मर गए तो फिर आगे 'मोक्ष' के लिए अवसर आपको मिल नहीं पाएगा। इसलिए रोग की चिकित्सा भी करवानी चाहिए।

शंका– जब मनुष्य अच्छे कर्म करता है, ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष के समय के बाद वो फिर जन्म लेता है और अच्छे कर्म करता है तो भगवान का मनुष्य को बार–बार जीवन देने का क्या उद्देश्य है?

समाधान– मनुष्य को बार–बार जन्म देना भगवान का उद्देश्य नहीं है। उसका उद्देश्य तो 'मोक्ष' में भेजना है। पर जब हम मोक्ष वाले कर्म ही नही करेंगे, तो भगवान क्यों मोक्ष में डाल देगा? कमी हमारी ओर से है, भगवान की ओर से नहीं। भगवान ने तो कह रखा है, 'ब्रह्मलोक' में जाओ, 'मोक्ष' में जाओ, यहाँ संसार में मत पड़े रहो, यहाँ तो दुःख भोगना पड़ेगा।

वह हमारी गड़बड़ है, हमारी कमी। **हम मोक्ष के लिए काम नहीं करते, बल्कि पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा के लिए काम करते हैं। इसलिए भगवान हमको बार–बार जन्म देता है।**

मोक्ष पाना हमारे हाथ में है, मोक्ष वाले कर्म करेंगे, तो मोक्ष मिल जाएगा। जैसे परीक्षा में अच्छे अंक लाना विद्यार्थी के हाथ में है। परीक्षक तो केवल निर्णायक है। इसी प्रकार से संसार में जन्म लेना या मोक्ष प्राप्त करना हमारे हाथ में है। ईश्वर तो केवल फलदाता निर्णायक है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

Thus Spoke Swami Dayanand

❖ God is the efficient cause of this universe, but the material cause is *prakriti*—the primordial elementary matter.

❖ Both God and the soul are eternal, they are alike in consciousness and such other attributes. They are associated together—God pervading the soul—and are mutual companions.

❖ If the happiness and misery of this world were compared, it will be found that the happiness is many times greater than the misery.

❖ God is formless. He cannot be God who possesses a body, because he would then have finite powers, be limited by time and space, be subject to hunger and thirst, heat and cold, wounds and injuries, pain and disease.

❖ God gives every man his due according to the nature of his deeds. God does not reward or punish men according to the caprice of his will.

❖ God, the soul and the Prakriti—the material cause— are three real entities.

❖ All objects of this world, such as the earth, are subject to the processes of formation, that is, are the product of definite combination. They can never be eternal, because a thing which is the product of combination can never exist after its component parts come as under.

❖ Say what you will, the indigenous native rule is by far the best. A foreign government, perfectly free from religious prejudices, impartial towards all—the natives and the foreigners—kind, beneficent and just to the natives like their parents though it may be, can never render the people perfectly happy.

❖ It is extremely difficult to do away with differences in language, religion, education, customs and manners, but without doing that the people (of a country) can never fully effect mutual good and accomplish their object.

Compiled by — Satyapriya, 09868426592

(Sourced from the English translation of 'Satyarth Prakash' by Dr. Chiranjiv Bhardwaj and published as 'The Light of Truth' from D.A.V. Publication Division)

thearyasamaj.org

हम तुम भांड हैं

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

समझदार तो इस शीर्षक पर नाराज हो जावेगा, उत्तेजित होकर सरोष स्वर में कहेगा– आपको अधिकार है कि अपने आपको भांड, गवैया–नचैया, बहुरूपिया या नौटंकीबाज कहें पर दूसरों को भांड कहने का आपको कोई अधिकार नहीं है। यदि मैं कहूं कि इस शब्द का प्रयोग महर्षि ने किया है तो आप अवाक् रह जावेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में ईश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव का वर्णन कर उसकी सगुण और निर्गुण भक्ति का उल्लेख किया है। ऐसी भक्ति का फल यह बताया है कि "जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे गुण–कर्म–स्वभाव अपना भी करना और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है। व्यर्थ शब्द का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महर्षि ने "चरित्र" का आदर्श "परमात्मा" को ही रखा है। इससे अधिक सबल, सार्थक, निर्दोष, निर्विवाद और कोई आदर्श हो ही नहीं सकता। जो ईश्वर स्तुति चरित्र सुधार के लिये नहीं की जाती उसका करना व्यर्थ है।

पूजा–पाठ के प्रचलित कारोबार को लगभग 40 वर्ष तक 24 घन्टे देख–सुनकर, उनके बीच रह कर, अत्यन्त सूक्ष्मता से अवलोकन करने के पश्चात् महर्षि का यह मन्तव्य, निष्कर्ष आज भी उतना ही सटीक है जितना उनके काल में था। मेरी तो अत्यन्त अल्प बुद्धि में सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश रचना का यह आधार वाक्य है।

सत्यार्थ प्रकाश में अपने मन्तव्य को स्थायित्व प्रदान कर आर्यसमाजियों को भी चेतावनी दे दी। लगभग 150 वर्ष आर्य समाज की स्थापना व सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित हुए, हो चुके हैं। महर्षि के मन्तव्य को कितने आर्यसमाजियों ने समझा व अपनाया है, उसका सिंहावलोकन होना चाहिए अन्यथा आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के रसातल की तरफ तीव्र गति से अग्रसर हो रहे कदमों को थामा नहीं जा सकता। मेरा मानना है कि महर्षि के मन्तव्य को जिस पीढ़ी ने समझा व अंगीकार किया, वह पीढ़ी ही समाप्त हो चुकी है। ग्वालियर के जिस आर्य समाज से मैं सम्बद्ध रहा, वह स्थापना के 125 वर्ष पश्चात् निम्नतम स्तर पर भग्न भवन को लेकर खड़ा है। पतन क्रमागत हुआ और प्रारम्भ होने के पश्चात् उस पतन की गति में तेजी आई। इस बिन्दु पर अभी इतना भी लिखना पर्याप्त है।

प्रसंग पर आता हूं। आज भी प्रत्येक आर्य समाजी ताल ठोक कर कहेगा कि हम वैदिक धर्मी ही ईश्वर विश्वासी हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में हमारा सोच ही सही है और पूजा–पद्धति भी सही है। ठीक है यदि दोनों बातें सही हैं तो हमारी संख्या वृद्धि होनी चाहिए पर स्थिति यह है कि वृद्धि कम और ह्रास ज्यादा हो रहा है। इसलिये न तो व्यक्तिगत रूप से हमें लाभ हो रहा है और न ही सामाजिक रूप से हमारी वैदिक विचारधारा को स्वीकृति मिल रही है। हम 150 वर्षों में महर्षि के महत्वपूर्ण आशय को जन सामान्य अथवा प्रबुद्ध वर्ग को ही अंगीकार कराने में सफल नहीं हो सके। परिणामस्वरूप पनपे वैष्णो देवी मन्दिर, बर्फानी बाबा, सत्यसाईं (पुट्टपार्थी), साईं बाबा (शिरडी), गायत्री मन्दिर, आसाराम बाबा, रामपाल बाबा, बाबा राम रहीम, निर्मल बाबा आदि। आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों धाम तो थे ही, उनमें दरगाहें, विशेषकर अजमेर शरीफ़, भी जुड़ गई हैं। हिन्दू भक्तों की इनमें अपार श्रद्धा है, आस्था है। अपार श्रद्धा और अटूट आस्था को तोड़ने में मेरा विश्वस नहीं है; हिम्मत भी नहीं है। हम वैदिक धर्मी अपने चरित्र और आचरण से तथा वैदिक विद्वान प्रवचन और लेखन से बहुत कुछ कर सकते हैं।

यह विषयान्तरण नहीं हुआ है बल्कि मुख्य विषय पर आने से पूर्व अपना मूल्यांकन कर आगे बढ़ना उचित प्रतीत हुआ।

15 नवम्बर 2014 को प्लेसनटन, यू.एस.ए. आने से पूर्व विचारतंत्री जीवात्मा ने पुर्नजन्म व कर्मफल सिद्धान्त आदि में उलझी हुई थी। दो लेखों में अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त करने के पश्चात् भी विश्राम नहीं मिल रहा था। यहां आने पर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुप्रसिद्ध ग्रंथ "जीवात्मा" का अध्ययन किया। इसी क्रम में सत्यार्थप्रकाश के सप्तम और अष्टम सम्मुलास का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। दूसरे पारायण में गाड़ी सम्मुलासों के क्रम पर अटक गई। यदि महर्षि का उद्देश्य केवल वैदिक धर्म की ही स्थापना होता तो प्रथम समुल्लास के बाद हीं सप्तम और अष्टम सम्मुलासों के विषयों को ही स्थान मिलना चाहिए था। शिक्षा, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, सन्यास आदि विषयों में छह समुल्लास लिखने की बात तो बाद में भी रखी जा सकती थी। दो–तीन दिन बुद्धि को इसी बिन्दु पर अटके रहने दिया। सत्यार्थप्रकाश की रचना का महर्षि का आशय समझ में आया, आत्मसात हुआ कि उनका उद्देश्य किसी प्राचीन, अर्वाचीन या नए मत को प्रस्थापित करने का नहीं था। उन्हें तो प्राचीनतम, सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना और व्यक्ति निर्माण, राष्ट्रनिर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करना था। उसका ही धरातल तैयार करने में छह अध्याय लिखने पड़े। व्यक्ति का सही निर्माण हो गया तो उसे ईश्वर और उसकी सृष्टि को समझने की योग्यता भी प्राप्त हो जावेगी।

इस लेख में तो मैं विषय के अनुरूप ही आगे बढ़ने का प्रयास करूंगा।

देखिए, महर्षि सप्तम सम्मुलास में क्या लिखते हैं:–

जो सब दिव्य–गुण–कर्म–स्वभाव और विद्यायुक्त है
जिसमें पृथिवी, सूर्यादि लोक स्थित हैं
जो आकाश के समान सर्व व्यापक है
जो सब देवों का देव परमेश्वर है
उसको
जो मनुष्य न जानते, न मानते और न उसका ध्यान करते हैं
वे
नास्तिक हैं और दु:खी होते हैं।

ईश्वर की परिभाषा और उसको न समझने का फल क्या इससे भी कम शब्दों में, पूर्ण स्पष्टता के साथ समझाया जा सकता है?

आर्यसमाज के लिये निर्धारित दस नियमों के दूसरे नियम में महर्षि ने ईश्वर को 21 गुण–कर्मों में व्याख्यात किया है। पूर्वोक्त वर्णन में (1) दिव्य–गुण–कर्म–स्वभाव (2) विद्यायुक्त (3) हिरण्यगर्भ व (4) सर्वव्यापक़ तत्व बताए हैं। नियमावली में पहिले दो बिन्दु पृथक रूप से रेखांकित नहीं हैं। दूसरे नियम का समापन इस वाक्यावली से किया है कि "वह सृष्टिकर्ता है और इसकी उपासना करना योग्य है।" इस प्रसंग का समापन सप्तम समुल्लास में महर्षि उसे 'नास्तिक' कह कर करते हैं और वह 'दु:खी' रहता है।

सामान्य जन ईश्वर में विश्वास न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। विद्वान वेद में आस्था न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। आप पूछेंगे कि दोनों में अन्तर क्या है? दोनों में अन्तर यही है कि वेदज्ञ विद्वान वेद में चिन्हित किए गए 'ईश्वर' को, जिसकी व्याख्या में अनेक मंत्र उपलब्ध हैं, उसे ही ईश्वर मानते हैं। और सामान्य जन के लिये तो प्रत्येक वस्तु ईश्वर का स्वरूप ले लेती है जो उसके सरल, सपाट दिलो–दिमाग में यह विश्वास दिलाकर उतार दी जावे कि वह 'वस्तु' या व्यक्ति उसके सब दु:खों, कष्टों और पापों का निवारण कर देने का सामर्थ्य रखता है। चाहे वह केदारनाथ, बद्रीनाथ, काशी, देवघर व उज्जैन के मन्दिरों में योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग ही क्यों न हो? ईश्वर का यह स्वरूप, पढ़ने, लिखने व बोलने में कितना कुत्सित लगता है? यही नहीं, समस्त चौबीस अवतार जिनमें सांप, सूअर शामिल हैं, 'ईश्वर' हैं।

महर्षि दयानन्द ने अनेक वेद मंत्रों, उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों के निचोड़ के रूप में सीधे सरल शब्दों में 'ईश्वर' को परिभाषित कर दिया है। इस परिभाषा के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं हो सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, महात्मा बुद्ध, बाइबिल तथा कुरान में वर्णित कोई भी ईश्वर नहीं। अन्य ईश्वरों को मानने वालों की भर्त्सना "नास्तिक" कह कर की है। जब ईश्वरों को मानने वालों का ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान ही अधपका, अधूरा और भटकाने वाला है तो उनकी पूजा–उपासना करने वाले सुखी हो ही नहीं सकते। दु:खी ही रहेंगे।

महर्षि यहीं नही रुके। परिभाषा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि सगुण और निर्गुण भक्ति क्या है? और उसका फल क्या है, महर्षि लिखते हैं? जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे अपने भी गुण स्वभाव करना। जो केवल 'भांड' के समान गुण कीर्तन करता जाता है और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका ईश्वर की स्तुति करना 'व्यर्थ' है। जो और व्यर्थ शब्दों का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ज़रा उसके प्रभाव को अनुभव तो कीजिए।

राजाओं और नवाबों के दरबारों में योग्य मंत्री चाहे हों न हों परन्तु भांड अवश्य रहते थे। राजाओं का मन बहलाना, मनोरंजन करना उनका काम होता था। सीमाहीन चाटुकारिता उसका अपरिहार्य अंग होता था। एक बार एक राजा के भोजन में बैंगन की सब्जी परोसी गई। राजा को सब्जी बहुत स्वादिष्ट लगी और उसने सब्जी की बहुत प्रशंसा की। भांड महोदय ने तत्काल कहा, महाराज, एक यही सब्जी है जिसके सिर पर छत्र है। राजा ने कहा– वाह–वाह, क्या खूब कहा। कुछ समय पश्चात् बैंगन की सब्जी फिर राजा के भोजन में आ गई। इस बार उसने राजा के पेट में विकार पैदा कर दिया। राजा बहुत नाराज हुआ, कहा– यह सब्जी बहुत खराब है। भांड महोदय ने छक्का लगाया। महाराज, इसीलिये इस सब्जी को बेगुन (बिना गुण वाला) कहते हैं।

महर्षि ईश्वर की स्तुति "चरित्र" निर्माण के लिये निर्धारित करते हैं। जिस व्यक्ति ने अपनी समस्त शक्ति, ध्यान यहां तक दी हो कि ईश्वरोपासना ही चरित्र निर्माण के लिये लगा तो वह बुराइयों की ओर आकर्षित ही नहीं होगा। उसके कल्याण का मार्ग स्वयं प्रशस्त होगा जावेगा।

अन्य सभी मत (धर्म) वाले ईश्वर स्तुति का फल या लाभ यह बताते हैं कि ईश्वर स्तुति से मनोकामना की पूर्ति, पापों से, बिना फल भोगे, छुटकारा और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। दोनों के मन्तव्यों में जमीन–आसमान का अन्तर है। महर्षि का मार्ग कठिन है, बहुत कठिन है। अन्य मत वालों का बहुत सरल। अन्य मतवाले

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

thearyasamaj.org

आर्य युवा समाज : संस्कार निर्माण केन्द्र

● डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी

1 जून सन् 1886 को युग प्रवर्त्तक क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी दयानन्द के भक्तों और देश धर्म के दीवाने आर्यों ने स्वामी जो की याद में डी.ए.वी. विद्यालय का प्रारम्भ किया। जिसका उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से देश में समग्र क्रान्ति पैदा करना था अर्थात् सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आमूल–चूल परिवर्तन। महर्षि दयानन्द के पश्चात् वैदिक क्रान्ति की यह मशाल लाला लाजपतराय, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानंद जैसे आर्य युवाओं ने सँभाली जिनकी आयु 19 वर्ष से 22 वर्ष तक थी। महात्मा हंसराज जी डी.ए.वी. की पताका लेकर बढ़े तो स्वामी श्रद्धानन्द शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धारक बने। दोनों ने मिलकर देश को नया स्वरूप प्रदान किया। दोनों का उद्देश्य वैदिक मार्ग पर चलते हुए युवा शक्ति का निर्माण करना था। क्योंकि युवक ही राष्ट्र के भाग्य निर्माता होते हैं। जिस देश का युवक भ्रष्ट होकर दिशाहीन हो जाता है वह देश रसातल को चला जाता है। आर्य समाज के दोनों महारथियों ने इस सत्य को समझ कर युवकों को आर्य समाज में लाने का प्रबंध किया। और इस प्रकार दो आर्य युवा संगठनों की स्थापना हुई। एक आर्य वीर दल तो दूसरा आर्य युवक समाज के नाम से कार्य करने लगा।

आर्य युवक समाज की स्थापना सन् 1896 में डी.ए.वी. कालेज लाहौर के छात्रावास में स्वयं महात्मा हंसराज जी ने की थी। वे आर्य युवक समाज के पहले प्रधान बने। तथा मंत्री के रूप में लाला साईं दास ने बागडोर सँभाली। महात्मा हंसराज डीएवी. कॉलेज के प्राचार्य थे तो श्री सईंदास डी.ए.वी. कालेज के वरिष्ठ प्राध्यापक थे जो महात्मा हंसराज के बाद डी.ए.वी. कालेज लाहौर के प्राचार्य बने। महात्मा हंसराज के द्वारा इस छोटे से संगठन के प्रधान की बागडोर संभालने का कारण संभवतः यही था कि वे आर्य युवा समाज हेतु प्राचार्य के रूप में अधिक प्रभावशाली हो सकते थे। यह संगठन छात्रावास में प्रतिदिन हवन संध्या का आयोजन करता था तथा भूकम्प, महामारी तथा राष्ट्र के संकट के समय कार्य करता था। इस संगठन की शाखाएँ प्रत्येक डी.ए.वी. संस्था में स्थापित की गईं थीं। देश पर आपदा के समय इस संगठन ने बहुत उत्तम कार्य किया। परन्तु भारत विभाजन के पश्चात् उत्पन्न स्थितियों के कारण डी.ए.वी. और आर्य समाज की काफी क्षति हुई। इसका प्रभाव आर्य युवक समाज पर भी पड़ा और धीरे–धीरे यह संगठन शिथिल होता चला गया। महाराष्ट्र के लातूर भूकम्प व गुजरात के भूकम्प की परिस्थितियों में डी.ए.वी. कालेज प्रबंधकर्ता समिति के प्रधान स्वर्गीय श्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा जी ने आर्य युवक संगठन की आवश्यकता अनुभव की। उन्होंने डी.ए.वी. पदाधिकारियों से विचार विमर्श कर 1 सितम्बर 2000 को वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार

1 जून सन् 1886 को युग प्रवर्त्तक क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी दयानन्द के भक्तों और देश धर्म के दीवाने आर्यों ने स्वामी जो की याद में डी.ए.वी. विद्यालय का प्रारम्भ किया। जिसका उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से देश में समग्र क्रान्ति पैदा करना था अर्थात् सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आमूल–चूल परिवर्तन। महर्षि दयानन्द के पश्चात् वैदिक क्रान्ति की यह मशाल लाला लाजपतराय, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानंद जैसे आर्य युवाओं ने सँभाली जिनकी आयु 19 वर्ष से 22 वर्ष तक थी। महात्मा हंसराज जी डी.ए.वी. की पताका लेकर बढ़े तो स्वामी श्रद्धानन्द शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धारक बने। दोनों ने मिलकर देश को नया स्वरूप प्रदान किया। दोनों का उद्देश्य वैदिक मार्ग पर चलते हुए युवा शक्ति का निर्माण करना था। क्योंकि युवक ही राष्ट्र के भाग्य निर्माता होते हैं। जिस देश का युवक भ्रष्ट होकर दिशाहीन हो जाता है वह देश रसातल को चला जाता है। आर्य समाज के दोनों महारथियों ने इस सत्य को समझ कर युवकों को आर्य समाज में लाने का प्रबंध किया। और इस प्रकार दो आर्य युवा संगठनों की स्थापना हुई। एक आर्य वीर दल तो दूसरा आर्य युवक समाज के नाम से कार्य करने लगा।

में एक आर्य युवा महा सम्मेलन का आयोजन कर आर्य युवक समाज के पुनर्गठन की घोषणा कर दी तथा इसका नेतृत्व करने के लिए एक होनहार, प्रतिभावान आर्य युवक श्री पूनम सूरी को आर्य युवक समाज का राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित कर एक कमेटी का गठन किया गया। इसमें डॉ धर्मदेव विद्यार्थी, डॉ. वी. कुलवन्त तथा श्री यशवीर आर्य को रखा गया। श्री पूनम सूरी जी ने शीघ्र ही देश के अन्य प्रान्तों में आर्य युवक समाज की स्थापना कर दी। महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने के लिए महिला समाज के आग्रह पर 'युवक' के स्थान पर संशोधन कर इस संगठन का नाम आर्य युवा समाज रखा गया। श्री पूनम सूरी ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम के द्वारा स्थान–स्थान पर आर्य युवा समारोहों का आयोजन कर लाखों छात्र–छात्राओं को इस संगठन के अन्तर्गत संगठित किया। कुरुक्षेत्र, जीन्द, पानीपत, आदि स्थानों पर जरूरतमंद कन्याओं के सामूहिक विवाह समारोह आयोजित कर 700 से भी अधिक कन्याओं का घर बसाया गया। सोनीपत, भंटिडा, अमृतसर, जालन्धर, ककराला, अबोहर, जयपुर, सोलन, हरिद्वार आदि स्थानों पर जन जागरण महा सम्मेलन कर हजारों ग़रीबों व जरूरतमंद लोगों को कम्बल, शाल, सिलाई मशीन तथा विकलांगों को जरूरत की मशीनें इत्यादि देकर मानव सेवा का उत्तम कार्य किया गया। जीन्द में पिछले 11 वर्षों से 250 विधवा महिलाओं की सहायता निरन्तर जारी है। गुजरात भूकंप, राजस्थान, का सूखा तथा हरियाणा में बाढ़ के समय आर्य युवा समाज का कार्य प्रशंसनीय रहा। जीन्द जिला गाँवों में शत–प्रतिशत साक्षरता अभियान चलाना तथा निर्मल ग्राम बनाने के लिए आर्य युवा समाज हरियाणा के अध्यक्ष डॉ धर्मदेव विद्यार्थी को सामाजिक क्षेत्र में प्रेरणाप्रद कार्य करने के लिए फीलिप्स बहादुरी पुरस्कार से सुशोभित किया जाना आर्य युवा समाज की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है। यह श्री पूनम सूरी की कड़ी मेहनत और दूर दृष्टि का परिणाम है कि आर्य युवा समाज के माध्यम से आर्य समाज में आशा जनक स्फूर्ति का संचार हुआ है। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध जन जागरण तथा जन चेतना पैदा करने के लिए आर्य युवा समाज को नई शक्ति प्रदान की है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि आज डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्ती समिति, नई दिल्ली जैसे बड़े संगठन और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान पद पर आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी विराजमान हैं। आर्य युवा समाज उनके नेतृत्व में पूर्ण विश्वास रखते हुए आर्य समाज के नव निर्माण एवं राष्ट्रोत्थान के पवित्र संकल्प सहित कटिबद्ध है। हम सब युवाओं से आह्वान करते हैं, देश को बचाने के लिए समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए तथा वैदिक मूल्यों पर आधारित समाज की संरचना के लिए श्री पूनम सूरी के नेतृत्व में आर्य युवा समाज में संगठित होकर अपने जीवन को सफल बनाएँ। यही वर्तमान युग की अभिलाषा है। आओ! हम सब मिलकर महर्षि दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलकर आर्यों की इस गाथा को चरित्रार्थ करें।

आई फौज दयानन्द वाली अब रास्ता कर दो खाली

पी.एच.डी.,डी लिट.

वैदिक प्रार्थना

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अथर्व. 19.15.5–6

O God, make me fearless.
Let me not fear my friends or foes.
Let me not fear
from the known or the unknown
during day or night.

Let me not fear anyone
and let me have friends
on all sides.

अभय करो प्रभु, अभय करो हमें।
भूमि से न भय हो, आकाश से न भय हो।
मित्रा से न भय रहे, शत्रु से न भय हो।
भय हो न सामने से, पीछे से न भय हो।
दायें से न भय हो, न बायें से ही भय हो।

दिन में न भय हो, न रात में भी भय हो।
शत्रु मेरा कोई न हो, सब ही दिशाएं मेरी
मित्रा बनें और मेरी मित्राता की जय हो!

thearyasamaj.org

होली प्रेम, उत्साह, रंगों व नवान्न-यव का स्वागत पर्व

● मनमोहन कुमार आर्य

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मनाए जाने वाले पर्व को होली के नाम से जाना जाता है। होली के अगले दिन चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को भी होली मनाते हुए अपने इष्ट-मित्रों व परिवारजनों के साथ एक दूसरे से मिल कर उन्हें कई प्रकार के रंग लगाने व परस्पर गीला रंग डालने, होली की शुभकामनाएँ देने व परस्पर मिष्ठान्न आदि से सत्कार करके मनाया जाता है।

भारत वर्ष की धर्म, संस्कृति व सभ्यता संसार में सबसे प्राचीन, सभ्य व मर्यादाओं से पूर्ण है। मनुस्मृति नाम का ग्रन्थ महर्षि मनु से सृष्टि के आरम्भ में लिखा था। इसमें उन्होंने लिखा है कि **'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशदग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्व मानवाः'** अर्थात् यह आर्यावर्त्त देश संसार में विद्वानों, ज्ञानियों, विचारकों, चिन्तकों, वैज्ञानिकों व अभियन्ताओं का अग्रजन्मा है जहा विश्वभर के लोग आकर अपने-अपने अनुकुल चरित्र आदि की शिक्षा ग्रहण करते हैं। महाभारत काल से कुछ समय पूर्व तक धर्म, संस्कृति व सभ्यता की यह निर्मल धारा अपने सत्य, यथार्थ व लोकोपकारी स्वरूप में बहती रही। इसके बाद इसमें कुछ विकार आने आरम्भ हो गए। महाभारत काल के बाद विकृतियों की यह प्रकिया तीव्र गति से बढ़ने लगी जिसके परिणाम स्वरूप भगवान बुद्ध व स्वामी महावीर का प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद स्वामी शंकराचार्य जी आए और उन्होंने नास्तिक मतों को पराभूत किया और पुनः वैदिक धर्म का शंखनाद किया परन्तु समाज में प्रविष्ट अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियाँ आदि दूर नहीं हुई अपितु यह पुनः तीव्रतर हो गईं। इसका परिणाम भारत के राजाओं की मुस्लिम आकान्ताओं से पराजय, राजाओं व क्षत्रियों की सामूहिक हत्याएँ, क्षत्राणियों व स्त्रियों का स्वत्वहरण और उसके बाद अंग्रेजों की पराधीनता के रूप में हमारे पूर्वजों ने देखा और भोगा। ऐसे समय में ही होली का प्राचीन वैदिक स्वरूप विस्मृत कर देश व समाज ने वर्तमान स्वरूप को अपना लिया।

सम्प्रति फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन लोग होली का व्रत आदि रखकर भोजन का त्याग कर शारीरिक तप करते हैं। सायंकाल व रात्रि में लकड़ियाँ इकट्ठा कर कुछ पौराणिक वा कुछ वेदों आदि के मन्त्रों से होलिका दहन करते हैं। जिन श्लोकों व मन्त्रों आदि को बोला जाता है उनकी विधि आदि का निर्माण विगत 100 से 200 या 300 वर्ष पूर्व होने का अनुमान है। इस दिन घरों में मिष्ठान्न के रूप में गुजियाँ आदि बनाई जाती हैं। जिसका परिवार व इष्ट मित्रों द्वारा सेवन कर आनन्द लाभ किया जाता है। प्राचीन काल में इसका अत्यधिक महत्त्व था परन्तु वर्तमान समय में सामाजिक व वैज्ञानिक उन्नति के कारण यह बातें कुछ कम महत्त्वपूर्ण हो गईं प्रतीत होतीं हैं। होलिका-दहन से यह अनुमान होता है कि प्राचीन परम्परा के अनुसार जब नई यव व गेहूँ की फसल पक कर लगभग तैयार होती थी तो उसके अन्न के दानों व होलकों से बड़े-बड़े सामूहिक यज्ञ करके ईश्वरीयेतर अग्नि, पृथिवी, वायु, जल, आकाश आदि देवताओं को आहुतियाँ दी जातीं थीं। इसके बाद ही नए अन्न का भक्षण, सेवन व भोग करने का कृषक व अन्य मनुष्यों को अधिकार होता था। इन बड़े यज्ञों का प्रतीकात्मक रूप ही वर्तमान के होलिका-दहन का आयोजन है।

होलिका दहन के अगले दिन लोग इस ऋतु परिवर्तन पर मनाए जाने वाले पर्व पर उत्साह व उमंग में भरकर अपने इष्ट-मित्रों, परिवार के छोटे-बड़े सदस्यों सहित अपने सभी पड़ोसियों को होली की बधाई और शुभकामनाएँ देते हैं। यह इसका एक अच्छा रूप है। दूसरों को शुभकामनाएँ व बधाई देना एक स्वस्थ सामाजिक परम्परा है। इसमें निहित भावना के अनुसार ही सभी का व्यवहार भी होना चाहिये। इससे निकटता बढ़ती है और परस्पर सहयोग से एक दूसरे के सुख व दुःख में सहायक होते हैं। इससे स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। इसमें एक प्रकार से सेवा व परोपकार का भाव निहित है। ऐसा भी कहा जाता है कि इस पर्व पर लोग अपने पुराने मतभेदों को भुलाकर परस्पर गले मिलकर नए मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की शुरूआत करते हैं। यह भी एक अच्छा सामाजिक कृत्य है। इसका विस्तार होना चाहिए परन्तु ऐसा देखा जाता है कि देश में वाद-विवाद कम होने के स्थान पर बढ़ रहे हैं जिसका कारण होली की परस्पर मैत्री भावना को सुदृढ़ करने में कहीं कुछ कमियों का रह जाना है। जिस पर विचार होना चाहिए। इस होली के दिन लोग प्रायः दिन के 1 या 2 बजे तक एक दूसरे को गुलाल लगाना, बधाई व शुभकामना देना, एक दूसरे के घरों पर जाकर गले मिलना व मिष्ठान्न आदि सेवन करना व करवाना आदि कार्यो को करते हैं। कई जगह एक स्थान पर आयोजन कर एक विभाग व कालोनी के लोग इकट्ठा होकर होली मिलन समारोह करते हैं। इस प्रकार से होली का पर्व हर्षोल्लास व धूमधाम से सम्पन्न हो जाता है।

आज व कल 5-6 मार्च, 2015 को होली मनाकर हम शीत ऋतु को भी विदाई देंगे और आगामी चैत्र व बैसाख महीनों का पूरे वर्ष भर के स्वास्थ्य आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ महीनों का स्वागत करेंगे। अब निर्धन व अल्प साधन वाले हमारे भाईयों को ठण्ड से ठिठुरना नहीं पड़ेगा, ठण्ड से होने वाले रोगों से मुक्ति मिलेगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और शरीर की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होने से यह पूर्व की तुलना में अधिक सुखदायक होगा। होली के शुभ अवसर पर इन विचारों को प्रस्तुत कर इस लेख को विराम देते हुए हम यह भी कहना चाहेंगे कि यह पर्व कुछ शुभ संकल्प लेने का भी है। इस अवसर पर मनुष्य को मदिरापान, मांसाहार, जुए, अमर्यादित आचरण से बचकर इन्हें त्यागने का व्रत लेना चाहिए और इसके साथ शुभ संकल्प के रूप में नियमित प्रतिदिन व्यायाम व प्राणायाम के साथ स्वाध्याय करने का व्रत भी लेना चाहिए। हम यह आवश्यक समझते हैं कि इस देश के प्रत्येक व्यक्ति को सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को इसके लेखक की भावना के अनुरूप अर्थात् सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग का मानस बना कर पढ़ना चाहिए। इससे मनुष्य का आध्यात्मिक, सामाजिक व शारीरिक विकास निश्चित रूप से हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप समाज व देश भी सुदृढ़ होंगे तथा वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा भी होगी। होली की सभी बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
फोन:09412985121

☞ पृष्ठ 06 का शेष

हम तुम भांड हैं

कहते हैं कि केवल ईश्वर का नाम जपने से ही उपरोक्त तीनों फल मिल जाते हैं। बस आदमी को चाहिए ही क्या!

आज भी हजारों साधु-सन्यासी मिल जावेंगे जो नाम "जप" का महत्व प्रतिपादित कर, विश्वास दिला देंगे कि इतने ही कार्य से ईश्वर-पूजन की प्रक्रिया समाप्त। नाम का जाप सीधा करो या उल्टा स्वर्ग (कौन सा स्वर्ग?) का द्वार खुला मिलेगा। राम नाम की जगह 'मरा'-'मरा' भी बोलोगे तब भी। क्योंकि परमात्मा अन्तर्यामी है, भक्त की भावना को समझता है। इसीलिये ये लोग "भावना" के महत्व की बात करते हैं।

सोमनाथ मन्दिर के परिसर में हम पति-पत्नी घूम रहे थे। कुछेक पुजारियों [पूजा के अरियों] (दुश्मनों) महर्षि ऐसी पूजा कराने वालो को यही कहते थे ने कहा कि वे हमारे लिये किसी को देवता (ईश्वर) का पाठ कर देगा। बस आपको अमुक-अमुक देवता की अमुक-अमुक राशि दक्षिणा में देनी होगी। हमने स्वयं भी देखा ऐसी पूजा चल भी रही थी। पूछा- पूजा का लाभ किसे मिलेगा। उत्तर मिला "भक्त" को यानि हमें! पूजा करेंगे पुजारी जी और लाभ 'भक्त' को। हे भगवन् कैसा "माया" जाल है!

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने का निर्देश देते हुए महर्षि ने सांकेतिक रूप से एक गुण का उल्लेख किया है कि वह न्यायकर्त्ता है। यह क्षेत्र ऐसा है जिसे बिना कुछ त्याग-तपस्या किए प्रत्येक मनुष्य अपना सकता है। यह गुण, सामाजिक गुणों का विकास करने का बहुत बड़ा आधार बन सकता है।

ईश्वर जाति-भेद, रंग-भेद, ऊंच-नीच, सम्पन्नता-विपन्नता, किसी भी कारण से न्याय करने में भेद-भाव नहीं करता। सृष्टि की रचना कर उसका निर्मूल्य, अपनी बुद्धि और सामर्थ्यानुकूल उपयोग करने की व्यवस्था परमात्मा ने कर रखी है। हम पूरी तरह से सृष्टि रचना का सत्यानाश करने पर तुले हुए हैं। आज हम पानी बेच रहे हैं। कल हवा बेचेंगे। पर्यावरण प्रदूषण इतना बढ़ गया है और दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है कि एक दिन आक्सीजन का सिलेंडर लेकर निकलना पड़ेगा। लाशों, कैमिकल्स और मानव द्वारा विसृत गंदगी से नदियां भरी पड़ी हैं। इन नदियों के जल का आचमन, स्नान-ध्यान, वेद में वर्णित मोक्ष तो नहीं देगा, उदर और त्वचा सम्बन्धी रोग जरूर देगा।

ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के संसाधनों का बुद्धिपूर्वक उपयोग भी, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने वाले महर्षि के मंतव्य की पूर्ति करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

ईश्वर भ्रष्टाचार नहीं करता, पाप नहीं करता। खाद्यान्न व औषधियों में मिलावट नहीं करता। ईश्वर कन्या-भ्रूण हत्या नहीं करता। क्या आप इन दुर्गुणों से दूर, बहुत दूर, जाकर ईश्वर के निकट, अति निकट आने का प्रयास भी नहीं करना चाहेंगे? या इन दुष्कर्मों में लिप्त रहकर "भांड" के समान स्तुति और प्रार्थना ही करते रहेंगे?

5776, बैलेजा ड्राइव, प्लेसनटन,
कैलीफोर्निया 94588 यू.एस.ए.

thearyasamaj.org

प्रार्थना

● धर्मपाल ठाकुर

मैं परमात्मा का उत्तम देवालय हूँ।
मैं स्वयं से प्रेम करता हूँ।।
मैं स्वयं को स्वीकार करता हूँ।
मैं परमात्मा और मृत्यु से डरता हूँ।।
मैं परमात्मा की रज़ा में रहता हूँ।
मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ।।

अध्यात्म जगत् का सब से महत्त्वपूर्ण शब्द प्रार्थना है। प्रार्थना का अर्थ है प्रभु का धन्यवाद करना जो कुछ भी मिला है उसके लिए प्रभु के प्रति कृतज्ञता करना और जो नहीं मिला है उसके लिए गिला न करना। जैसे स्वामी शिवानंद लिखते हैं:–

Prayer is not asking, prayer is commnion with God through single-minded devotion....... Prayer is thanks giving to God for all His blessings.

- Bliss Divine P-440

प्रार्थना कोई मांग नहीं है। प्रार्थना प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति है। प्रार्थना प्रभु द्वारा दिये गये आशीर्वादों के लिए उसका धन्यवाद करना है।

इसके अतिरिक्त प्रार्थना का एक यह भी अर्थ है कि संसार के सब व्यक्तियों के कल्याण एवं परोपकार के लिए प्रार्थना करना। इसके विषय में मैं आपकी सेवा में वेदों के निम्नलिखित दो मंत्र प्रस्तुत करना चाहता हूँ। इन मंत्रों में साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर सारे ससांर के लोगों के कल्याण की कामना की गई है:–

1. **ओ३म् भूर्भुवः स्वः।**
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रयोदयात्।। –यजुर्वेद 36.3

हे प्रभु। आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक, सत्–चित्–आनंद स्वरूप है। आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफलदाता हैं। हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप, वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदयमंदिर में ध्यान धरते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

2. **ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।**
यद्भद्रं तन्नऽआसुव।। –यजुर्वेद 30.3

हे प्रभु। आप कृपया हमारे सम्पूर्ण, दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइए।

इन दो मंत्रों में मानवता के कल्याण एवं परोपकार के लिए निःस्वार्थभाव से प्रार्थना की गई है। यह भी सच्ची प्रार्थना है। परन्तु जो हमें मिला है उसे हम भूल जाते हैं। जो नहीं मिला है उसके लिए गिला करते हैं। जैसे एक कवि के शब्दों में :–

उसने मुझे बहुत कुछ दिया।
मैंने उसका धन्यवाद न किया।।

मुख्यतः व्यक्ति धार्मिक स्थानों में जाकर प्रार्थना नहीं करते अपितु भिखारियों की भाँति अपनी–अपनी मांगों की सूची परमात्मा के आगे रखते हैं। मैंने धार्मिक स्थानों पर भिखारियों की पक्तियां देखी हैं जो कि अपनी–अपनी मांगे मांगते हैं, परन्तु प्रभु का धन्यवाद करने वाला कोई बिरला ही होता है। मांगने के निम्नलिखित तीन अर्थ हैं :–

1. प्रभु से शिकायत करना:– आप प्रभु से शिकायत करते हो कि मुझे यह नहीं मिला है, वह नहीं मिला है। जो कुछ भी आप को मिला है उससे आप संतुष्ट नहीं हो। सदा प्रभु का धन्यवाद करते रहो अर्ज प्रभु से ही करो, अपना फर्ज पूरा करो, कर्ज़ सिर पर न रहे और मर्ज शरीर में न रहे, ताकि आप प्रभु की निरन्तर, निष्काम, अनन्य भक्ति करके आनंद प्राप्त कर सको।

2. सलाह देना:– मांगने का यह भी अर्थ है कि आप स्वयं को प्रभु से अधिक बुद्धिमान समझते हो कि मुझे यह भी देना चाहिए था।

3. प्रभु के अन्तर्यामी होने पर संदेह करना:– परमात्मा अन्तर्यामी है इसलिए वही जानता है कि आपके लिए कौन सी वस्तु अच्छी है या बुरी। वही हमारा माता–पिता है। जैसे एक माता के चार पुत्र हैं। एक परीक्षा देने जा रहा है तो वह आपको घी के मालपूड़े बना कर देती है ताकि उसका ज्ञान एवं स्मरण शक्ति बनी रहे और वह परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सके। दूसरा पुत्र खेत में सब्जी लगाने जा रहा है उसे वह प्याज की सब्जी से भोजन करवाती है ताकि उसको कहीं लू न लगे जाये। तीसरे पुत्र का पेट खराब है, इसलिए वह उसे खिचड़ी खिलाती है ताकि उसका पेट ठीक रहे। चौथा पुत्र बीमार है तो वह उसको दवा देती है ताकि वह स्वस्थ हो जाये। इसी प्रकार परमात्मा हमारा माता–पिता होने के कारण हमें वही वस्तु देता है जो हमारे लिए हितकारी हो। जैसे एक उर्दू शायर ने लिखा है :–

न मैं यह चाहता हूँ न वो चाहता हूँ।
बस अपने रब्ब की रज़ा चाहता हूँ।।

परन्तु मुख्यतः जो कुछ हमें परमात्मा ने दे रखा है उसके लिए तो हम उसका धन्यवाद नहीं करते हैं जो नहीं मिला है उसके लिए गिला करते रहते हैं। जैसे शेख शादी इतने गरीब़ थे कि उनके पास जूते भी नहीं थे। वे एक दिन नवाज़ अदा करने के लिए मस्जिद की ओर जा रहे थे। उन्होंने मार्ग में एक फ़कीर को देखा जिसके पाँव ही नहीं थे तो शेख शादी ने खुदा का धन्यवाद किया कि उनके पास जूते न सही पाँव तो है।

इसी प्रकार अमेरिका का अपने समय का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति अनडर्यू कार्नोगी जब मृत्युशैया पर आखरी साँसें ले रहा था तो पत्रकारों ने उसने पूछा कि आप कैसा अनुभव कर रहे हो, तो उसने उत्तर दिया कि मैं बहुत दुःखी होकर मर रहा हूँ क्योंकि मैं 10 अरब डॉलर की सम्पदा छोड़कर ही मर रहा हूँ जबकि मेरा लक्ष्य 100 अरब डॉलर की सम्पदा छोड़कर मरने का था।

प्रभु के प्रति धन्यवाद का शब्द आपके मुख से तभी निकलेगा यदि आप अस्पतालों में जाकर उन रोगियों को देखोगे जिनके शरीर पर पलस्तर बँधा है और जिनको ग्लूकोज चढ़ा हुआ है। कई रोगी रोग की पीड़ा के कारण चिल्ला रहे हैं। आप जब अपाहिज आश्रमों में जाकर अपाहिजों को देखोगे जो स्वयं खाना भी नहीं खा सकते। किसी के हाथ नहीं, किसी के पाँव नहीं हैं। इसके अतिरिक्त पागलखानों में जाकर पागलों की दुर्दशा देखोगे जिन्हें जंजीरों में बाँध रखा है। वस्तुतः आपकी प्रार्थना तभी आरंभ होती है जब आपकी मांग बंद हो जाती है। जैसे एक कवि ने कितना सुंदर कहा है–

जो असल में मस्ती में डूबे,
उन्हें क्या परवाह है ज़िन्दगी की।
जो चढ़े और उतरे वह तो मस्ती नहीं है,
ये तो प्रेम की बातें हैं ऊधो।।
बंदगी तेरे बस की नहीं है
यहाँ सर देके होते हैं सौदे।
आशिक़ी इतनी सस्ती नहीं है।।

अतः अभी से मेरी बात मानो कि परमात्मा से अपनी मांगे मांगना बंद कर दो और उसे धन्यवाद देना आरंभ कर दो। जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में :–

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
न मिलती अगर दी हुई दात तेरी।
तो क्या थी जमाने में औक़ात मेरी।
यह बंदा तो तेरे सहारे जिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
यह जायदाद दी है, यह औलाद दी है।
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है।
तेरा ही दिया मैंने खाया पीया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
मेरा ही नहीं तू सभी का है दाता।
सभी को सभी कुछ है देता दिलाता।
जो खाली था दामन को तूने भरा है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना
तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना।
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूँ मालिक।
तेरे ही कर्म से मैं जिन्दा हूँ मालिक।
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दियाहै।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।

वीरा ऑरस, एम.ए.
1135/11 पंचकुला, हरियाणा
फोन नं. 0172–2567845

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उर्वरक नगर बरौनी में आनन्द प्रदायिनी गीता सप्ताह आयोजित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उर्वरक नगर, बरौनी के प्रांगण में प्रार्थना सभा में गीता आयोजित सप्ताह का समापन समारोह का आयोजन प्राचार्य श्री मुकेश कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप–प्रज्ज्वलन, मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। तत्पश्चात 18 अध्यायों का छात्र–छात्राओं ने समवेत स्वर में वाचन किया।

अतिथि का स्वागत करते हुए प्राचार्य श्री मुकेश कुमार ने कहा कि–

वैदिक अभिवादन "नमस्ते" व गीता भारतीयता की सार्वभौमिक पहचान है। गीता जीवन के रहस्यों को समझने का 'पासवर्ड' है। यह शताब्दियों से भारतीय ज्ञान व सांस्कृतिक परंपरा का जीवंत अंग है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था विद्यार्थियों द्वारा गीता के श्लोकों का समूह वाचन प्रतियोगिता जिसमें आठ समूहों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान – माघ समूह, द्वितीय स्थान – कालिदास समूह एवं तृतीय स्थान – भवभूति एवं भारवि समूह को मिला।

मुख्य अतिथि श्री संजय शास्त्री ने सम्पूर्ण गीता का अति संक्षिप्त स्वरूप सीमित शब्दों में व्यक्त किया। सरल शब्दों में जिस प्रकार उन्होंने गीता सार–भावना, विचार एवं कर्म को समझाया वह अत्यंत प्रेरणास्पद था।

छात्र–छात्राओं ने अत्यंत धैर्य एवं शांति के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाभ उठाया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

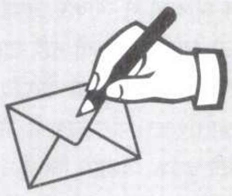

पत्र/कविता

कब कोई चूहा हमें जगायेगा

आज़ादी के प्रथम स्वप्न दृष्टा आर्य समाज के संस्थापक, युग पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 1883 की दीपावली को हुआ। जिस महापुरूष ने अपना सम्पूर्ण जीवन और जीवन की प्रत्येक श्वांस जन कल्याण में लगा दी उनका जीवन हमारी, समाज व राष्ट्र की दशा नहीं सुधार सका तो फिर कौन आयेगा इस देश की दशा–दिशा सुधारने, कौन आयेगा आर्यों को अपना कर्तव्य बोध कराने।

हम प्रतिवर्ष स्वामीजी का जन्म दिन, बोध दिवस, निर्वाण दिवस आदि बड़े उत्साह से मनाते हैं पर हमारे उत्सवों में क्या हमें कभी उमंग भी दिखती है? क्या कभी लगता है कि ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये हम कुछ कर रहे है? आगे बढ़ रहे हैं।

समाज में बढ़ रहा अंध विश्वास व मत मतान्तर क्या कभी हमें झकझोरता है कि स्वामी ने सत्यार्थ प्रकाश क्यों लिखी? क्या हम इस सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ तदनुकूल आचरण कर रहे हैं? अगर नहीं तो कब जागेंगे और कब सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के ज्ञान का समाज में फैलायेंगे या साप्ताहिक सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश की कक्षा कर इति श्री करते रहेंगे।

स्वामीजी को एक चूहे ने बोध करा दिया क्योकि उनकी अन्तः चेतना जागृत थी पर पता नहीं हम आर्यों को कब बोध होगा? कब कोई चूहा हमें जगायेगा और कब हम ऋषि के संदेश को, उपदेश को जन जन तक पहुंचा समाज व राष्ट्र का भला करेंगे।

आर्य समाज के माध्यम से हम इस देश से अशिक्षा, अस्पृश्यता का नाश करने में लगें तो निश्चय ही भारत एक बार फिर विश्वगुरु बन पूरे विश्व को शांति के मार्ग पर ला सकता है और विश्व से हिंसा, आतंक, भूख, गरीबी व अनाचार को मिटा सकता है।

आवश्यकता है:–

आर्यो तुमको तड़फना भी है,
तड़फाना भी है।
आग बनना ही नहीं,
आग बरसाना भी है।।

डॉ. श्रीगोपाल बाहेती
महषि दयानन्द निर्वाण न्यास
भिनाय कोठी, अजमेर।

****

देव दयानन्द

दुनिया वालो पहचान लो
ये देव दयानन्द हैं।।

निडर हैं निर्भर हैं
टंकारा के आनन्द हैं।।

निर्मल हैं निश्छल है
सुसौरम हैं, मकरन्द हैं।।

ब्रह्मचारी हैं बलिष्ठ है
आनन्द भी हैं सुआनन्द भी हैं।।

वेदों के मूल कन्त हैं
पाखण्ड नाशक हैं, राष्ट्र उदारक हैं।।

नारी रक्षक हैं धर्म सुधारक हैं
स्वराज घोषक हैं सत्यार्थ प्रकाशक हैं ।।

वेदेज्ञ हैं ये वेदों के प्रचारक हैं
आर्यों की शान हैं महर्षि महान हैं।।

दुनिया वालो पहचान लो।
आर्येश ये देव दयानन्द हैं।।

जब अपने ही अपने नही हुये
औरां का शिकवा भला क्या करें।।
'आर्ये' अपनी ही जुबां बेकाबू हुई
गैरों पर बन्दिश क्या करें।।

स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
मनन क्लिनिक, सिरोही रोड़ (राज.)

हिंदुओ में पुरोहितों का प्रभुत्व प्रभु से भी भारी!

इस बार भी पंचागी–पंडितों ने अखबारो में भी छपवाकर भरपूर प्रयास किया कि 14 जनवरी को भी मकर संक्रांति मनायी जाये, ताकि कोई भी समझदार हिंदू जनता किसी भी व्रतों के बारे में स्वयं निर्णय लेने का सूत्र न बना ले। जबकि संक्रांति, सतुआन, वैशाखी, विश्वकर्मापूजा, गणतंत्र दिवसादि अनेक भारतीय पर्व अंग्रेजी के ही निश्चित तारीखों में होते हैं।

गाड़ी खरीदना हो या घर बनाना हो; कहीं आना–जाना हो या जन्म–मृत्यु; विवाह करना हो या गर्भाधान–सभी कुछ मुझसे ही पूछ कर करो!' इसीलिये इन धूर्त पुरोहितों ने हिंदुओं को मुहूर्तवाद के महाजाल (जंजाल) में इतना जकड दिया है, मानो यूरोप के पोपों का ही ये हिंदू–संस्करण हो। अब 'पाप मुक्ति–पत्र' और 'स्वर्ग का टिकट' ही प्रत्यक्षतः बिकना बाकी है।

धन्यवाद दे हिंदू जनता को, कि निर्मल बाबाओं की तरह इन उटपटांगी –पंचांगी–पुरोहितों की भ्रामक–बातों में न आकर अमिताभ–मोदी से लेकर लालू –मांझी तक सभी ने 14 के ही संक्राति मनाई।

15 जनवरी को संक्रांति मनाने के पीछे पंडितों का कुतर्क था कि इस बार मकर का सूर्य 14 जनवरी की रात में आ रहा है? हिंदुओं को पुश्त–दर–पुश्त मूर्ख बना रहे इन विज्ञान –विमुख पंडितों को कौन समझाये कि भारतीय – राष्ट्रीय–पंचांगानुसार 22 दिसंबर से ही मकर –मास शुरू हो जाता है, इसी दिन से रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं।

अतः, किसी भी पर्व को दो दिनों में बाँटने वाले ढुलमुल पंचांगकारों का अंधानुकरण बंद करके, सभी पर्वो की एक निश्चित तालिका ग्रेगरी कैलेंडर से बने; क्योंकि ये अंग्रेजी कैलेंडर ही सर्वाधिक उपयुक्त और विज्ञान सम्मत भी है।

आर्य गिरि, निंगा,
आसनसोल

****

वेद और गीता

देहली में आयोजित गीता सम्मेलन में ''गीता'' को राष्ट्रीय–धर्म–पुस्तक घोषित करने की मांग धर्म प्रेमियों द्वारा की गई। बधाई।

प्रश्न यह भी महत्वपूर्ण है कि हमारे आदि–ग्रन्थ 'वेद' को विश्व का श्रेष्ठ ग्रंथ घोषित करने का प्रयास क्यों नहीं? संयुक्त राष्ट्र संघ में ''वेदों'' को विश्व का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ घोषित की मान्यता प्रदान करने का प्रयास क्यों नहीं किया जाता? ''वेद'' विश्व के समस्त धार्मिक ग्रन्थों से सर्वश्रेष्ठ कृति है। सदियों से भारत में इसकी चर्चा होती रही है तथा ''वेद'' विश्व के कई विश्वविद्यालयों में भी मान्यता रखते हैं। अतः समस्त विद्वानों से अनुरोध है कि ''वेदों'' को भी विश्वस्तर पर मान्यता दिलाने का प्रयास करें।

कृष्ण मोहन गोयल
अमरोहा–244221

****

thearyasamaj.org

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. श्वेतकेतु ने पढ़ा शोध पत्र

आर्य समाज बिहारीपुर के मंत्री व आयुर्वेद संस्कृत विद्वान डॉ. श्वेतकेतु शर्मा ने राष्ट्रीय भाषा संस्थान व भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी के द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 7-8 फरवरी 2015 को संस्कृत भाषा में लिखा "वैदिक संस्कृत वाङमये वैज्ञानिक शोध चिन्तनम् विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. शर्मा ने अपने शोध पत्र में सप्रमाण सिद्ध किया संस्कृत व वैदिक वाङमय में वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और संस्कृत विद्वानों द्वारा साथ-साथ शोध किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने 15 विषयों पर अपने शोध पत्र में विस्तृत चर्चा की है।

डॉ. शर्मा ने कहा कि वेदों में विज्ञान, आयुर्वेद, भूविज्ञान, ब्रह्माण्ड विज्ञान, भाषा विज्ञान, संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयाम आदि अनेकों विषयों की सप्रमाण चर्चा है जिस पर बहुमुखी विकास किया जा सकता है।

इस अवसर पर कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे. वी. वैशम्पायन, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. काशीनाथ न्योपाने, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो. अशोक कुमार कालिया, उ.प्र. संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. हरिदत्त शर्मा, लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत अध्यक्ष प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल, प्रो. राम प्रकाश पाण्डे, नेपाल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. प्रेमराज न्योपाले, नारी शिक्षा निकेतन लखनऊ के अध्यक्षा डॉ. विभा अग्निहोत्री आदि उपस्थित रहे।

नशाबंदी सम्मलेन सम्पन्न

नशे की इस बुराई को दिल्ली से समाप्त करने के लिए एक नशाबंदी सम्मेलन दयानंद भवन (रामलीला मैदान) आसफ अली रोड़ पेट्रोल पंप के पास नई दिल्ली 02 पर सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में सैकड़ो लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली नशाबंदी समिति के अध्यक्ष श्री मामचंद रिवाड़िया जी ने की। श्री मामचंदरिवाडिया जी ने सभी राजनैतिक पार्टियों से दिल्ली में पूर्ण नशाबंदी की मांग करते हुए कहा की दिल्ली में अवैध तरीके से स्मैक, चरस, गांजा, शराब, की मांग की ।

कार्यक्रम संयोजक और संस्था के महासचिव श्री राकेश कुमार (निगम पार्षद कुंचा पंडित) ने दिल्ली में पूर्ण नशाबंदी और तमाम अवैध तरीके नशीले पदार्थो की बिक्री पर रोक लगाने लेकर पुरानी दिल्ली में जनजागरण अभियान शुरू का ऐलान किया।

गैर सरकारी संस्था के अध्यक्ष श्री रविन्द्र नाथ वोहरा ने कहा दिल्ली में स्मैक, चरम, गांजा शराब और अन्य प्रकार के ड्रग्स की अवैध बिक्री एक चिंता का विषय है। इस पर रोक लगनी चाहिए। डॉ. परवेज अहमद जी ने कहा की नौजवानों में बढ़ती नशाखोरी को देखते हुए हमे जगह-जगह निशुल्क नशामुक्ति केंन्द्र बनाने की जरूरत है।

शमा वेलफेयर फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती शमा परवीन ने कहा की शराब स्मैक, गांजा आदि प्रकार की नशाखोरी के कारण सबसे जयादा अत्याचार महिलाओं पर ही होते हैं! नशे की लत के कारण उनका परिवार आर्थिक तंगी के जाल में फंस जाता है।

प्रधानाँ मोहल्ला रोहतक में ऋषि दयानंद बोधोत्सव

आर्य समाज प्रधानाँ मौहल्ला रोहतक में 'ऋषि दयानंद बोधोत्सव' प्रधान नन्दलाल गाँधी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य शंभू मित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न हुआ। विद्यालय के छात्रों से विशेष आहुति डलवाकर नकल न करने का संकल्प दिलवाया गया। दयानंद के जीवन पर बहन लक्ष्मी देवी आर्या एवं संजय आर्य द्वारा सुन्दर भजनोपदेश किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली निवासी जे. एन. चौधरी एवं प्रेम चौधरी जी द्वारा विधवा, गरीब तथा अनाथ हेतु 4,000/- हजार रुपये एवं मासिक सहायता के रूप में दान दिया। अंत में शांति मंत्र के उच्चारण उपरांत सभा सम्पन्न हुई।

सत्य का महत्त्व

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप' सत्य का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है इसलिए क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज के पहले पांच नियमों में सत्य के महत्त्व को स्थापित करते हुए सत्य शब्द का प्रयोग किया है। चौथे नियम में तो स्पष्ट निर्देश दिया है कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" महर्षि दयानन्द ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है "जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है। व्यवहारभानु में देव दयानन्द मनुष्य के जीवन में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए लिखते हैं "सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।

सत्य के महत्त्व को स्थापित करते हुए वेद भगवान भी **"ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति"** ऋ. 4/23/8 अर्थात सत्य का आचरण पापों को नष्ट कर देता है। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो सत्य का आचरण मनुष्य को पापों से दूर कर देता है। झूठे अंधेरों की चट्टानें कितनी मजबूत क्यों ना हों सत्य के सूर्य के उदय होने के आभास मात्र से टूटकर खत्म हो जाती हैं। सत्य के सामने झूठ कभी नहीं टिक सकता और अंत में सदा सत्य की विजय होती है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है "सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्।" अर्थात् सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। मनुष्य की हर मनोकामना सत्य से ही पूरी होती है। सत्य का मार्ग चाहे जितना भी कांटों से भरा, कष्ट से परिपूर्ण क्यों ना हो, लेकिन सत्य के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। सत्य से ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है अतः मनुष्य को कभी किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य वह दिव्य दीपक है जो मनुष्य के आन्तरिक तम अविद्या को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है समाज के लोग सदा उसकी बातों पर विश्वास करते हैं। सत्यवादी के साथ लोग निःशंक और निश्चिंत होकर व्यवहार करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि सत्यवादी व्यक्ति हमें धोखा नहीं देगा। इससे समाज के लोगों को सुख मिलता है। सत्यवादी सदा निर्भीक और चिन्तामुक्त होकर आनन्द से जीता है, उसे कभी किसी से डर नहीं लगता। सत्यवादी को अपने हर कार्य के लिए परिवार-समाज के लोगों का समर्थन मिलता है और समाज का समर्थन मिलने से उसका उत्साह बढ़ता है। वह सदा प्रसन्न रहता है। सत्य बोलने वालों की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है और पूर्ण सत्यवादियों का यश युगों तक बना रहता है। सत्य बोलने वाले को कभी किसी के सामने बोलने में डर नहीं लगता और उसे कभी मानसिक तनाव नहीं होता, अच्छी निश्चिंत नींद आती है। शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ रहते हैं। सत्यवादी सदा प्रसन्न रोगमुक्त, निश्चिंत रहता है। सत्यवादी की सभी योजनाएं पूरी होती हैं, क्योंकि उसे अपनी सभी योजनाओं के लिए जब परिवार समाज का सहयोग मिलता है क्योंकि जनता को उसके सत्य आचरण के कारण पूरा विश्वास होता है कि सत्यवादी उनके सहयोग का सदा सदुपयोग ही करेगा। इसलिए सत्यवादी का भविष्य सदा उज्ज्वल होता है। सत्य बोलने से परिवार समाज और राष्ट्र में परस्पर विश्वास और प्रेम का वातावरण बनता है जिससे सभी को सुख मिलता है।

सत्य के महत्त्व को स्थापित करते हुए ही वेद भगवान ने मनुष्य मात्र को आदेश दिया **'वाचः सत्यमशीय।'** अर्थात मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूँ। इससे आगे बढ़कर सत्य के साथ माधुर्य को धारण करने का निर्देश देते हुए कहा गया **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात ब्रूयात्सत्यमप्रियम।** मनुस्मृति अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय भाषा में बोलो, सत्य को कटु भाषा में मत बोलो। क्योंकि मनुष्य का शरीर आत्मा का मंदिर, सर्व अन्तर्यामी परमात्मा का निवास है। अतएव इसे सदा सत्य आचरण से स्वच्छ रखें और कभी झूठ बोलकर गंदा न करें। सरलता को रथ और सत्य को शस्त्र बनाकर जीवन के संग्राम में कूद पड़ो क्योंकि सत्यमेव जयते नानृतम्' सदा सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। इसलिए मनुष्य के लिए यही श्रेयस्कर है कि वह जीवन में सदा सत्य व्रतों को धारण करे।

502 जी, एच- 27
सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608686

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 11-12/3/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. पटियाला ने '51 कुण्डीय यज्ञ' करके मनाया 'दयानन्द व आनन्द उत्सव

आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड़, पटियाला द्वारा युग प्रवर्त्तक, महान समाज सुधारक व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 'जन्म व बोध दिवस' आनन्द उत्सव के रूप में मनाया गया। इस पावन अवसर पर '51 कुण्डीय यज्ञ' किया गया, जिसमें श्री पूनम सूरी जी (प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे तथा दसवीं और बारहवीं कक्षा के लगभग 500 विद्यार्थियों ने यजमान की भूमिका निभाई।

इसके पूर्व प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर ने मुख्य अतिथि व अन्य अतिथिगण का स्वागत किया। इस अवसर को चिर स्मरणीय बनाने के लिए मुख्य अतिथि ने 'महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती प्रतिभा–विकास–केन्द्र' का लोक समर्पण किया तथा कामना की कि यह स्थल विद्यार्थिया कीं सर्वांगीण प्रतिभा के विकास में एक मील पत्थर सिद्ध होगा। तत्पश्वात् माननीय श्री पूनम सूरी जी ने स्कूल परिसर के नये 'महात्मा हंसराज प्रशासकीय विभाग' का उद्घाटन किया।

समारोह की दूसरी कड़ी के अन्तर्गत 'आनन्द उत्सव' स्थानीय 'हरपाल टिवाना सेन्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के भव्य सभागार में एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया; जिसमें डी.ए.वी. का शिक्षा दर्शन, भारतीयता व राष्ट्रीय के विभिन्न मोहक रंग प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों व शिक्षकों को 'दयानन्द व आनन्द उत्सव' की बधाई देते हुए इस प्रयास की भरपूर सराहना की तथा अपने सम्बोधन में कहा, ''हमें बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना होगा होगा। दयानन्द जी व आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाते हुए डी.ए.वी. संस्था शिक्षा के साथ–साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास में विश्वास रखती है।''

स्कूल की शैक्षणिक व अन्य वार्षिक उपलब्धियों पर प्राचार्य प्रभाकर ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर 125 मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत व सम्मानित किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल यूनिट 7 भुवनेश्वर में ''ऋषिबोधोत्सव''

आर्य समाज, शहीद नगर के मूर्धन्य विद्वान तथा गुरुकुल के संचालक स्वामी अभेदानन्द सरस्वती ने मुख्यअतिथि के रुप में पधार कर दीप प्रज्ज्वलित करके यज्ञ का प्रारंभ किया। प्रारंभ में गायत्री महामंत्र से उत्सव का शुभारंभ हुआ। विद्यालय के धर्माचार्या श्री संतोष कुमार पट्टनायकजी के द्वारा आयोजित इस उत्सव में विद्यालय के सभी कार्यकर्ताओं के साथ छात्र छात्राओं ने भाग लेकर जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए आहुतियाँ प्रदान कीं। स्वामी अभेदानन्द सरस्वती ने स्वामी दयानन्दजी के जीवनी पर बोलते हुए उनकी आदर्श को अपने जीवन में शामिल करने और मात–पिता–गुरु के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यालय की प्राचार्या तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, ओडिशा की प्रधाना डॉ. श्रीमती भाग्यवती नायक जी ने महर्षि दयानन्दजी के समाज के प्रति त्याग और निष्ठा के संदर्भ में प्रकाश डाला। इस अवसर पर आयोजित एक क्विज प्रतियोगिता में कृति प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के संयोजिका डॉ. श्रीमती ममता बानार्जी ने बच्चों को शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए

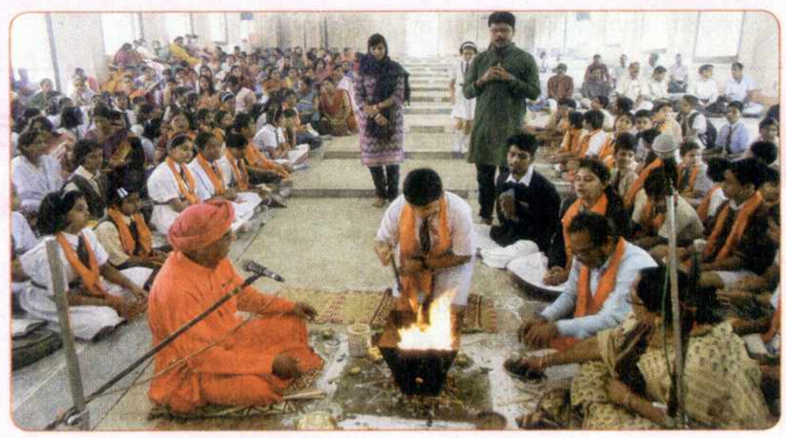

भविष्य के जीवन में उत्तरोत्तर सफलता की कामना की। ततपश्चात् शान्तिपाठ पूर्वक सभा का समापन किया गया।

महात्मा चैतन्यमुनिजी भुवनेश्वर, ओड़िसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित

आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम उधमपुर, जम्मू के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर, ओड़िसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपतरायजी द्वारा स्थापित लोकसेवक मण्डल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्यजी द्वारा प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्माजी की अब तक लगभग पच्चास साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेद प्रचार अधिष्ठाता, महामन्त्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है जिसके लिए इन्हें सभा की ओर से सम्मानित भी किया गया था। सभा की पत्रिका आर्यवन्दना के सम्पादन से ये बीस वर्षों से जुड़े रहे... पत्रिका आरंभ करने तथा इसे प्रतिष्ठि प्रदान करने में इनका अत्यधिक सहयोग रहा है। इन्होंने वैदिक वशिष्ठ पत्रिका, शब्द, नवनीत भारती तथा गूंजती घाटियाँ आदि पत्रिकाओं में भी सम्पादन सहयोग प्रदान किया है। ये एक प्रतिष्ठित लेखक ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध

वैदिक प्रवक्ता भी हैं जिन्होंने मानव मूल्यों की स्थापना हेतु देश विदेश में वैदिक संस्कृति की सार्वभौमिक विचारधारा को अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से प्रचारित एवं प्रसारित किया है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**